UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 11 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | अगस्त - 2023

मूल्यः 12

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी—शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक—डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक—उमाशंकर मिश्र।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

वन्देमातरम्

वंदनीय कण-कण ऋणी हैं बसुन्धरा के,
देशभक्ति गरिमा की लतिका बढ़ाइये।
प्राण उत्सर्ग कर गौरव से चूमे फंद,
बलिदानियों की रज शीश पे चढ़ाइये।।
खुली साँस ले रहे हैं एक आसमान तले,
एकता अखंडता की ज्योति को जलाइये।
जहाँ पर जन्म लिया शान से मरेंगे वहीं,
वन्देमातरम् कहते मत घबड़ाइये।।

मानवीयता के द्वार भाईचारा सद्भाव,
देश-प्रेम-भक्ति की ही ज्योति को जलाइये।
घाव गहरे इतने हैं अभी तक रिस रहे,
हो सकें तो प्रेम का ही मरहम लगाइये।।
आतताई आँधियों में आतंकी बयार-वेग,
मत चिनगारियों की आग भड़काइये।
वन्देमातरम् देशनिष्ठा का प्रतीक एक,
द्वार-द्वार उच्च स्वर मिलकर गाइये।।

अपनी बात

स्वतंत्रता दिवस मात्र एक ही नही, वरन उन तमाम संघर्षो, बलिदानों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को याद करने का दिन है जिनके बिना हम यह दिन मना ही नही पाते। यह उन संकल्पों को भी दोहराने का दिन है जो आजादी की लड़ाई के बीच लिए गए थे। आज की युवा पीढ़ी और हम अपने वर्तमान संघर्ष और भविष्य निर्माण में इस तरह व्यस्त हो गये हैं कि हमे अपने अतीत और इतिहास का समुचित भान ही नहीं। यही नहीं आज जिस खुली हवा में हम सांस ले पा रहे हैं इसे हम केवल अपना अधिकार मान बैठे हैं। उसके पीछे के संघर्ष और बलिदान से अनभिज्ञ हमारे युवा उसके मूल्य और उसे सहेजने के अपने दायित्व को ठीक से समझ नहीं पाए हैं। अस्तु आज यह आवश्यक है और हमारी यह जिम्मेदारी भी है कि हमारी युवा पीढ़ी, शिक्षक, विद्यार्थी और हम सभी अपने गौरवशाली इतिहास को जाने उस पर गर्व करें तथा उसके संरक्षण के लिए संकल्प बद्ध हों।

आज जब हम स्वाधीनता दिवस मनाते है तो वास्तव में हम अपनी 'भारतीयता' का उत्सव मनाते हैं। हमारा भारत जो अनेक विविधताओं से भरा देश है परन्तु इस विविधता के साथ ही हम सभीमें कुछ न कुछ ऐसा है जो एक समान है। यही समानता हम सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरोती है तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

भारत अपने पहाड़ों, नदियों, झीलों और वनों तथा उन क्षेत्रों में रहने वाले जीव–जंतुओं के कारण अत्यंत आकर्षक है। आज जब हमारे पर्यावरण के सम्मुख नई–नई चुनौतियां आ रही है तब हमें भारत की सुंदरता से जुड़ी, जल, मिट्टी और जैविक विविधता आदि हर चीज का दृढ़तापूर्वक संरक्षण के लिए हमें सजग और सचेष्ट रहना है। भारत के सभी नागरिकों को 'न्याय, स्वतंत्रता, समानता के साथ–साथ, लोक–कल्याण, सामाजिक समरसता, न्याय, समानता और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता बढ़ाने वाले गरिमापूर्ण और भाईचारे से परिपूर्ण जीवन' हमें सुनिश्चित करना है, सबको एक मानें, सारी दुनिया के संसाधन सिर्फ मेरे लिए नहीं हैं। वह सबके लिए है। सब मेरे अपने हैं मेरे परिजन है। इस तरह की सोच कि सब को सब कुछ, सभी को मिले। बाद में हमें भी। त्यागभाव से हम सुखोपभोग की वृत्ति जागृत करें। हम राष्ट्र के स्तर पर भी विचार करेंगे, तभी हमारी उन्नति होगी। इसलिए अधिक से अधिक उत्पन्न करना और उसे लोगों में बाँटना यह हमारी सनातन परंपरा रही है। इसके निर्वहन में हम कभी शिथिल न हों। यद्यपि आज स्वतंत्रता के 76 वर्षों में देश ने बहुत प्रगति और विकास किया है। वैश्विक स्तर पर भारत की एक विशेष पहचान बनी है। तथापि विश्व गुरु के पद पर भारत को हमे पुनः स्थापित करना है। ऋग्वेद संहिता, दशम मंडल में अभिव्यक्त इन पंक्तियों को स्मरण रखना तथा तदनुसार जीवन जीना सबके लिए हितकर होगा।

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वंसं वो मनांसि जानताम् । भागं यथा पूर्वे सच्जानाना उपासते ।।

अर्थात हम सभी साथ–साथ चलें। आर्थिक तरक्की और विकास के रास्ते में दुनिया के दक्षिणी छोर से उत्तर तक और पूर्वी छोर से पश्चिम तक हममें से कोई भी हममें पीछे न रह जाए, कोई भी बिछड़ न जाए। हम सभी साथ–साथ बोलें, साथ–साथ चिंतन करें और साथ मिलकर ऐसे ज्ञान का सृजन करें जिससे विश्व का कल्याण हो सके। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

वीर पुरुष मृत्यु का आनन्द लेते हैं

फरवरी 1906 में बंगाल के मेदिनीपुर नगर में एक विशाल प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। अंग्रेज राज्यकर्ताओं के अन्याय पर पर्दा डालना इस प्रदर्शनी का उद्देश्य था। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हुई थी। उस समय एक सोलह वर्षीय तरुण दर्शकों को पत्रक (पर्चे) बॉटता हुआ दिखाई दिया। उस पत्रक का शीर्षक था 'सोनार बाँगला'। उसमें 'वन्दे मातरम्' का नारा था। अंग्रेजों की क्रूरता का भी उस परचे में उल्लेख था।

इंग्लैण्ड निण्ठ कुछ लोगों ने उस लड़के का विरोध किया। वन्दे मातरम्, स्वतन्त्रता, स्वराज्य, इस प्रकार के शब्द उन्हें सूई की भाँति चुभते थे। उन्होंने उस तरुण को पत्रक बाँटने से रोका। लोगों ने उसे पकड़ने का प्रयास किया परन्तु वह उनकी पकड़ में नहीं आया। अंत में एक पुलिस कर्मी ने उस तरुण का हाथ पकड़ा। उसके हाथ से परचे छीन लिए। तरुण ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ाया और हाथ घुमाकर सिपाही की नाक पर जमा कर घूंसा मारा। फिर उसने परचे उठा लिए और कहा–''ध्यान रखो, मुझे स्पर्श मत करना। मैं देखूंगा कि मुझे वारंट के बिना पुलिस कैसे पकड़ती है।'' ऐसा कहते हुए वह जनसमूह में अदृश्य हो गया।

अब लोगों ने भी 'वन्दे मातरम्' के नारे लगाने आरम्भ कर दिए। यह दृश्य आश्चर्य चकित करने वाला था। बाद में उस लड़के के विरुद्ध मुकदमा चलाया गया, परन्तु अल्प आयु के कारण न्यायालय ने उसे मुक्त कर दिया। जिस वीर से सम्बन्धित यह घटना है उसका नाम था खुदीराम बोस।

ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ने के लिए अंग्रेजों पर पहला बम फेंकने वाले क्रांतिकारी खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर 1889 को मेदिनीपुर जिले के बहुबेनी ग्राम में हुआ था। मेदिनीपुर बंगाल का एक जिला था। इनके पिता का नाम त्रैलोक्यनाथ बसु तथा माता का नाम श्रीमती लक्ष्मी प्रिया देवी था। पिताजी नदझोल तहसील के तहसीलदार थे। इकलौते पुत्र होने के कारण खुदीराम बोस माता–पिता के लाडले बेटे थे। मात्र 6 वर्ष की अवस्था में ही उन्हें माता–पिता का बिछोह सहना पड़ा। उनका पालन–पोषण बड़ी बहन अनुरुपा देवी ने माँ की तरह किया। उनके जीजा अमृतलाल जी उनको बहुत प्यार करते थे।

देश भक्ति का भाव बालक खुदीराम में बाल्यावस्था से ही जागृत हो गया था। गोरे लाल मुँह वाले अंग्रेजों का भारत पर शासन करना उन्हें बिल्कुल भी नहीं सुहाता था। ''आनन्द मठ'' उपन्यास के रचयिता बंकिमचन्द चट्टापाध्याय मेदिनीपुर में ही शासकीय सेवा में थे। इस उपन्यास का गीत ''वन्दे मातरम्'' बड़ा लोकप्रिय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को इस गीत से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। आज भी यह राष्ट्रगीत के रूप में प्रत्येक राष्ट्रीय समारोह एवं विद्यालयों में गाया जाता है। यह वन्देमातरम् का गीत ही बालक खुदीराम का प्रेरणा स्रोत बना।

1905 में गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने भारतीयों का मनोबल गिराने के लिए बंगाल का विभाजन किया। इस विभाजन का पूरे राष्ट्र ने एक स्वर से विरोध किया। आनन्दमठ उपन्यास से प्रेरित होकर खुदीराम बोस ने भी अपने जीवन को देश की सेवा के लिए न्यौछावर करने का संकल्प लिया। अतः

वे क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए। इसके लिए उन्हें अनेक कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। क्रांतिकारियों के साथ खुदीराम बोस ने पिस्तौल आदि अस्त्र–शस्त्रों का प्रयोग करना सीखा। उन्होंने वन्देमातरम् गाने तथा आनन्दमठ पढ़ने के लिए अपने साथियों को भी उत्साहित किया।

अंग्रेजों ने वन्दे मातरम् के बढ़ते प्रभाव को देखकर, वन्दे मातरम् कहने को राजद्रोह घोषित कर दिया। देशभक्त विपिन चन्द्रपाल ने "वन्दे मातरम्" पत्रिका का प्रकाशन किया। श्री अरविन्द घोष इसके संपादक नियुक्त हुए। 1907 में अंग्रेज सरकार ने वन्दे मातरम् पत्रिका पर राजद्रोह का अभियोग लगाया। भारतीय युवकों ने इसका प्रबल विरोध किया। 26 अगस्त 1907 के दिन हजारों युवक कोर्ट के सामने इस अभियोग का विरोध प्रकट कर रहे थे। इस पर क्रुद्ध होकर अंग्रेज सिपाही एक युवक को अकारण पीटने लगे। 15 वर्षीय सुशील कुमार सेन ने जब इसका विरोध किया तो अंग्रेज अधिकारी उसको डॉटने लगे। बस क्या था सुशील कुमार ने अंग्रेज अधिकारी की नाक पर घूंसा मारा और पुलिस सिपाही को बहुत पीटा। इस अपराध के कारण सुशील कुमार सेन पकड़े गए और उन्हें न्यायाधीश किंग्ज फोर्ड ने 15 कोड़े मारने की सजा दी।

क्रांतिकारी दल ने किंग्ज फोर्ड से बदला लेने का निश्चय किया। 1908 में उसकी हत्या की योजना बनाई गई। खुदीराम ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया। दल प्रमुख खुरीदाम बोस और प्रफुल्ल चाकी को कुछ पैसे और पिस्तौल देकर मुजफ्फरपुर की ओर रवाना किया। किंग्ज फोर्ड उन दिनों वही सेसन जज के पद पर नियुक्त था। प्रफुल्ल कुमार चाकी रंगपुर ग्राम का रहने वाला था। वह खुदीराम की ही आयु वर्ग का था तथा उसी के समान देश भक्त था।

30 अप्रैल 1908 की रात मुजफ्फरपुर के यूरोपियन क्लब के समीप फोर्ड की घोड़ा गाड़ी पर खुदीराम ने बम फेंका पर निशाना चूक जाने के कारण किंग्ज फोर्ड बच गया। उसके अतिथि कैनेडी की पत्नी, लड़की और नौकर मारे गये।

बम फेंकर खुदीराम 25 मील तक भागते चले गये पर आखिरकार वेनी रेलवे स्टेशन के पास लखा नामक स्थान पर पकड़े गए। प्रफुल्ल कुमार चाकी ने पुलिस द्वारा घेरे जाने पर स्वयं को पिस्तौल की गोली मारकर राष्ट्रहित में अपनी बली दे दी। अंग्रेज सिपाही उसका सिर काटकर मुजफ्फरपुर ले गए।

खुदीराम को मृत्यु दण्ड देने का आदेश दिया गया। वे बड़े हँस सुख थे। फाँसी से एक दिन पूर्व जेलर ने उन्हें आम खाने को दिया। बोस ने आम तो खा लिया, परन्तु उन्हें एक मजाक सूझा। डरपोक अपनी मृत्यु से पहले ही हजार बार मर जाते हैं, परन्तु वीर उसका आनन्द लेते हैं और एक ही बार मरते हैं। बोस भी आज मृत्यु का आनन्द लेना चाहते थे, अतः उनकी अटखेली करने की इच्छा थी। खुदीराम ने आम के छिलके रख दिए। सायंकाल जब जेलर आया तो उसने पूछा–"कैसा लगा आम ?"

"मैंने आम खाया नहीं, जेलर साहब ! आप अपने हाथ से खिला दीजिए न।" जेलर ने आम उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। उठाते ही वह पिचक गया। जेलर खिसिया सा गया और बोस खिल खिलाकर हँस पड़े। यह वह सरल हंसी थी, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

फाँसी से पूर्व उनसे बयान देने को कहा गया तो उन्होंने कहा–"राजपूत वीरों की तरह मैं देश की स्वाधीनता के लिए मरना चाहता हूँ। फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्ज फोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।"

11 अगस्त 1908 को प्रातः 6 बजे खुदीराम बोस को फाँसी दी गयी। मृत्यु के समय उनके हाथ में श्रीमद्भगवदगीता थी और चेहरे पर बलिदानी की मोहक मुस्कान।

फाँसी के समय इस वीर किशोर की आयु कुल अठारह वर्ष आठ महीने थी। भारत के ऐसे होनहार बलिदानी तरुण को शत शत नमन्।

आइये ! बनाए अपना संतुलित जीवन

कमल कुमार
(प्रदेश निरीक्षक)
जन शिक्षा समिति प0प्र0

मन बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियाँ ये ज्ञान प्राप्ति के मुख्य द्वार है। बुद्धि से विद्या प्राप्त होती है और सदबुद्धि से विद्या का सार जैसे अंधेरे में उजाले की, अभावों में सहयोग की और समस्याओं में सुझावों की वैसे ही जीवन भटकाव के समय में मार्ग दर्शन की, ठीक उसी प्रकार अज्ञान के समय में ज्ञान की जरूरत पड़ती है। परहेज के बिना जैसे दवा असर नहीं करती, उसी प्रकार श्रद्धा के बिना ज्ञान असर नहीं करता। जब हम किसी व्यक्ति से पूछते है कि आप कौन है? तो आम तौर पर व्यक्ति अपने व्यवसाय का परिचय देते हुए कहता है–मैं डॉक्टर हूँ इंजीनियर हूँ, प्रधानाचार्य हूँ व्यापारी हूँ, वकील हूँ, सम्भाग निरीक्षक हूँ, आदि अब सोचने की बात यह है कि व्यक्ति केवल डॉक्टर, इंजीनियर, प्रधानाचार्य, व्यापारी, वकील, सम्भाग निरीक्षक ही तो नहीं है। यह तो और भी बहुत कुछ है।

वह अपने बच्चों का पिता है, पत्नी का पति है, माता का पुत्र है और बहिन का भाई है। डॉक्टर के पास जाता है तो पेशेन्ट भी है, यात्रा करता है तो यात्री भी है, खेल का शौकीन है तो खिलाड़ी भी है और किसीसे माल खरीदता है तो ग्राहक भी है। इस प्रकार डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी, प्रधानाचार्य के साथ–साथ अनेका–अनेक भूमिकाएं भी निभाता है। कोई भी मानव केवल एक ही भूमिका के सहारे जीवन नहीं काट सकता। अनेक प्रकार के पार्ट मनुष्य को निभाने होते हैं।

झुकाव से जब पलड़ा झुकता है– अब प्रश्न उठता है कि जब एक भूमिका से काम नहीं चल सकता तो वह केवल एक भूमिका का लेवल अपने पर क्यों लगता है? यह उसका अज्ञान और अभिमान दोनों को प्रदर्शित करता है। उसने समाज में अपनी पहचान इसी लेवल से बना ली है। इस प्रकार के लेवल से मनुष्य की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बार–बार उसे अपने उस व्यवसाय नाम, पद को सुनकर उस व्यवसाय या पद से गहरा लगाव व झुकाव हो जाता है। जब झुकाव हो जाता है तभी पलड़ा एक तरफ झुक जाता है तो दूसरी तरफ से उखड़ भी जाता है, और वह अपनी दूसरी भूमिकाओं से लगभग उखड़ा रहता है। उन्हें महत्व कम देने लगता है, उनकी उपेक्षा करने लगता है, साथ ही उनके प्रति अपने कर्तव्यों का उल्लंघन करने लगता है।

फुर्सत नहीं है (I have no time) – कई बार देखने में आता है कि पत्नी बीमार है, तो व्यवसायिक पति कहता है कि यह लो पैसे डॉक्टर को दिखाओ, मेरे पास समय नहीं है बेटा कहता है, पिताजी! आचार्य जी ने आपको याद किया है तो कहता है ये लो पैसे, शुल्क जमा कर देना, किताबें कापियां खरीद लेना, आचार्य जी से कहना मिलने का मेरे पास समय नहीं है। बूढ़ी माँ कहती है–बेटा! दो मिनट मेरे पास बैठ! बेटा कहता है" नो! नौकर का प्रबन्ध कर दिया है। वह सेवा कर दिया करेगा। मुझे दुकान से फुर्सत नहीं है।

छिन जाता है सुख रूपी धन– चूंकि वह प्रधानाचार्य है। प्रधानाचार्य का लेवल उस पर लगा है, विद्यालय को व्यवस्थित करने तथा शिक्षकों व छात्रों को दिशा दृष्टि देने में 12 घन्टे लगते हैं। बाकी का समय भी अप्रत्यक्ष रूप में उसका ही चिन्तन करने में लग जाता है। अब सवाल उठता है कि वह पिता का रोल, पति का रोल, भाई का रोल, कब निभायेगा? समय नहीं निकलता तो पत्नी, पुत्र, भाई बहिन, माँ आदि के साथ सम्बन्धों में वो मिठास नहीं आ पाती है। वह सफल प्रधानाचार्य व्यापारी तो बन जाता है परन्तु पति, पिता, पुत्र, व भाई, आदि के रूप में असफल हो जाता है।

व्यापार उसे केवल धन देता है। वह धनी तो बन जाता है परन्तु परिवार का रूपी सुख रूपी धन उससे छिन जाता है। मन की शान्ति, खुशी, आनन्द जो भिन्न–भिन्न सम्बन्ध से मिलना था, उससे यो वंचित हो जाता है। इसलिए अधिकतर आनन्द व खुशी को गलत जगह लगाता है।

सब वाह वाही करें– मैं कौन हूँ? पहले इस प्रश्न का सही–सही उत्तर जानो मैं डॉक्टर हूँ, वकील हूँ, प्रधानाचार्य हूँ, व्यापारी हूँ। यह इस प्रश्न का सही उत्तर नहीं है। सही उत्तर है–डॉक्टर की भूमिका निभाने वाली मैं एक आत्मा हूँ। दिन भर में अनेक भूमिकाएं निभाती हूँ। हर भूमिका के साथ मुझे न्याय करना है ताकि हर रोल पर मुझे वाह वाही मिले। पति का रोल प्ले करूं, तो पत्नी वाह वाही करे, पिता का रोल प्ले करूं तो पुत्र–पुत्री वाह वाही करे। पुत्र का रोल प्ले करूं तो माता–पिता वाह वाही करे। तब मैं सृष्टि मंच पर सफल कलाकार कहलाऊँगा। इसके अभाव में असफल कलाकार ही माना जाऊँगा।

विराम चिन्ह लगाना सीखे–लौकिक पढ़ाई में विराम चिन्हों का बड़ा महत्व है। वाक्य पूरा होने पर विराम चिन्ह लगाने से भाषा सुन्दर बनती है। पढ़ने वालों को अलग–अलग अर्थ समझ में आता है, नहीं तो एक वाक्य जब दूसरे से मिल जाता है तो गड़बड़ हो जाती है। आध्यात्मिकता का मूल मंत्र भी यही कहता है कि हर भूमिका निभाने के बाद विराम चिन्ह लगा दो। ताकि अगली भूमिका के साथ न्याय हो सके। वकील, इंजीनियर, प्रधानाचार्य के नाते आपकी भूमिका यदि 8.00 बजे पूरी हो गयी तो वहां का कार्य समाप्त करके फुल स्टॉप लगा दीजिये और घर जाकर पिता पुत्र की भूमिका निभाईये। इससे आप स्वयं हलके रहेंगे और कर्त्तव्य परायण भी रहेंगे तथा हर एक को सन्तुष्ट भी कर सकेंगे। "जिन संबंधों को अपने से जोड़ लिया है पर उनकी सही देख रेख नहीं होती है तो यह ऐसे ही हैं जैसे व्यर्थ की रस्सी उनके ओर हमारे बीच बंध गयी है जिसे हम काटते भी नहीं और सही दिशा में चलने के लिए सहयोग भी नहीं करते। सही प्रकार से सम्बन्ध न निभा पाने के कारण कहासुनी मनमुटाव, अनवन, असन्तोष चलता रहता है।" यदि हम कर्त्तव्य नहीं निभाना चाहते है तो रस्सी काट दें, उन सम्बन्धों को स्वतंत्र कर दें पर हम ऐसा भी नहीं करते। इस स्थिति में सम्बन्ध सुखदायी न रहकर दुःख दायी स्थिति में बदल जाते हैं।

आश्रितों से निभाएं–सिद्धान्त कहता है कि या तो सम्बन्ध जोड़ो नहीं और जोड़ते हो तो 20 नाखूनों का जोर लगाकर ही निभाओ अपने छोटे से छोटे कर्तव्य को भी समर्पण के साथ निभाओ संबंध निभाने में ही महानता है। आज पल में सम्बन्ध जोड़ने और पल भर में संबंध तोड़ने का खेल चल रहा है। यह भौतिकता की देन है! आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित सतयुगी दुनिया में हर रिश्ता टीकाऊ था। प्रसिद्ध ग्रन्थ रामायण में एक प्रसंग आता है कि रावण से तिरस्कृत होकर विभीषण जब राम की शरण में आया तो बहुतों ने उन्हें समझाया कि इस राक्षस जाति के व्यक्ति को शरण देकर झंझट में न फसें। इस बात को सुनकर प्रभु श्रीराम ने कहा, मेरी शरण या मेरे आश्रय में जो भी आता है अपना सब कुछ न्यौछावर करके भी मैं उसकी रक्षा करता हूँ।

भगवान को भी शरणागत वत्सल कहा गया है। आश्रित की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है। अतः हम भी उपरोक्त प्रसंग से प्रेरणा लेकर अपने आश्रितों की प्रेम से जिम्मेदारियों उठायें। यदि आत्मा में शक्ति नहीं है तो आ यात्मिकता द्वारा वह शक्ति भरें। इसके अर्थ है परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर उनसे शक्ति प्राप्त कर पारिवारिक भूमिकाएं बखूबी निभायें ईश्वरीय शक्तियाँ बहुरूपी है। बुराइयों से नाता तोड़ने की सामर्थ्य रखती हैं और अच्छाई से जुड़े रहने की सद्‌बुद्धि देती हैं। इन शक्तियों का प्रयोग स्वयं पर अवश्य करके देखें जीवन कां किसी भी दिशा में अत्यधिक झुकाने के बजाय सन्तुलन से चलें। सन्तुलन अर्थात बेलेंस से चलने वाले को ही वेलेंसिंग मिलती है।

बाल शिवा की प्रतिभा

'हिन्दवी स्वराज्य' की स्थापना ही जीवन का उद्देश्य

पुणे की दक्षिण–पश्चिम दिशा में लगभग 82 किलोमीटरकी दूरी पर, रोहिडखोरे की भोर तहसील में, सह्याद्रि की सुरम्य वादियों के बीच, समुद्र तल से लगभग 4694 फीट ऊंचाई परघने जंगलों में श्री रायरेश्वर गढ़ स्थित है। यह हिन्दवी स्वराज्य का दुर्ग नहीं है, परंतु सह्याद्रि की यही वह पवित्र पहाड़ी है, जोहिन्दवी स्वराज्य के शुभ संकल्प की साक्षी बनी। सह्याद्रि कीपर्वत श्रृंखलाओं में सांय–सांय करती हवा पर कान धरा जाए तोआज भी वीर बालक शिवा की प्रतिज्ञा की वह गूंज सुनी जासकती है, जिसने धर्मद्रोही मुगलिया सल्तनत को उखाड़ फेंक दिया था।

श्री रायरेश्वर के विस्तृत पहाड़ पर वह प्राचीन शिवालय आजभी है, जहाँ एक किशोर ने अपने कुछ मित्रों के साथ ''स्वराज्य'' की शपथ ली, जिसकी कल्पना करना भी उस समय कठिनथा। मुगलिया सल्तनत के अत्याचारों के चलते हिन्दू आत्मविस्मृत हो चला था। उसके मन में यह विचार ही आना बंद होगया था कि यह भारत भूमि उसकी अपनी है। वह यहाँ मुगलोंकी चाकरी क्यों कर रहे हैं? देश में गो–ब्राह्मण, स्त्रियां औरधर्म सुरक्षित नहीं रह गया था। हिन्दू समाज को इस अंधकार सेबाहर निकालने और उसके मन में एक बार फिर आत्मगौरव कीभावना जगाने का संकल्प शिवाजी महाराज ने लिया था। हमकह सकते हैं कि हिन्दवी स्वराज्य की संकल्पना का यही प्रथम उद्घोष हुआ।

प्रकृति के अनेकविध रूपों का दर्शन कराने वाले सह्याद्रि केरमणीय उतुंग शिखर पर स्वयंभू महादेव विराजे हैं। नाना प्रकार के पुष्पों के पौधे एवं लताएं, यहाँ सघन वन का सौंदर्य बढ़ाती हैं। विविध प्रकार के पक्षियों के कलरव से भी मन का आनंद बढ़ता है। सोच कर हैरान था कि एक किशोर अपने साथियों केसाथ पुणे से इस दुर्गम पठार पर स्थित शिवालय में संकल्प केलिए आया। उस समय शिवाजी 15–16 वर्ष के किशोर थे। उनके साथ बारह मावल प्रांतों से कान्होजी जेधे, बाजी लोकेन्द्र सिंह पासलकर, तानाजी मालुसरे, सूर्याजी मालुसरे, येसाजी कंक, सूर्याजी काकड़े बापूजी मुदगल, नरसप्रभू गुप्ते, सोनोपंतडबीर भी थे। वीर बालक शिवाजी ने स्वयंभू श्री रायरेश्वरमहादेव के समक्ष इन सिंह समान महापराक्रमी मावलों के मनको कुछ इस तरह झकझोरा होगा–मुगलों की पराधीनता हम कब तक सहेंगे ? चंद जागीरों की खातिर हम कब तक धर्म परघात होने देंगे? गो–ब्राह्मण और स्त्रियों पर अत्याचार आखिर कितने दिन तक सहते रहेंगे? मैं अब यह सब नहीं सह सकता, मैंने एक संकल्प कर लिया है।

शिवाजी की ओजस्वी वाणी से मावलों में एक तरंग दौड़ गईहोगी और उन्होंने कहा होगा कि महाराज अपनी इच्छा प्रकट कीजिए। जैसा आप कहेंगे, हम वैसा ही करेंगे। हाँ, हम वैसाही करेंगे। मावलों के इस प्रकार के उत्तर से निश्चित ही महाराज उत्साहित हुए होंगे और उन्होंने कहा होगा, तो आओ, हम सब महादेव श्री के समक्ष प्रतिज्ञा करें कि 'हम अपना राज्य स्थापित करेंगे। अब से हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना ही हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य होगा। हम सब प्रकार के कष्ट उठाएंगे, प्रत्येक परिस्थिति में हम एक–दूसरे का साथ देंगे। श्रीरायरेश्वर को साक्षी मानकर हम प्रतिज्ञा करते हैं कि स्वराज्य की स्थापना के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देंगे।'

वीर शिवाजी ने 'हिन्दवी स्वराज्य' की संकल्पना में अपनेसाथियों के विश्वास को और पक्का करने के लिए कहा कि यहमेरी इच्छा नहीं है, अपितु "हिन्दवी स्वराज्य ही श्रींची इच्छा"। अर्थात यह हिन्दवी स्वराज्य की इच्छा ईश्वर की इच्छा है। ओजस्वी वाणी के कंपन और शुभ संकल्प की ऊर्जा से शिवालय का वातावरण प्रेरक हो गया था। मावलों के मन मेंयह बात बैठ गई कि हिन्दवी स्वराज्य का सपना किसी एकशिवाजी का नहीं है, यह हम सबका सपना है और हम ईश्वरीय कार्य के काम आने वाले रणबांकुरे हैं। वीर बालक शिवा ने 26 अप्रैल, 1645

को श्री रायरेश्वर महादेव का अभिषेक अपनी अंगुली के रक्त से करके हिन्दवी स्वराज्य के संकल्प के प्रति अपने समर्पण को प्रकट किया और महादेव का आशीर्वाद लिया। इस शपथ विधि के बारे में स्वयं शिवाजी महाराज ने ही 1645 में अपने एक राजमुद्रांकित पत्र में उल्लेख किया है। श्री रायरेधवर की शपथ में महादेव के सामने कसम खाने की रोहिड़खोरे में पुरानी परिपाटी थी। अपनी श्री शिव छत्रपति दुर्ग दर्शन यात्रा के दौरान जब हम अपने मित्रों के साथ श्री रायरेश्वर पहुंचे तो हमने भी हिन्दवी स्वराज्य की प्रतिज्ञा भूमि श्री रायरेश्वर के पवित्र प्रांगण में छत्रपति शिवाजी महाराज का पुण्य स्मरण कर, उसी दिव्य शिवलिंग के समक्ष प्रतिज्ञा की–"मैं अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा से निभाऊंगा, पर्यावरण के संरक्षण हेतु तत्पर रहूँगा एवं दूसरों को भी आग्रह करूंगा, भोजन का एक कण भी व्यर्थ नहीं होने दूंगा, भारतीय उत्पादों के उपयोग को वरीयता दूंगी, अन्याय का सदैव प्रतिकार करूंगा, भारतीय कालगणना का स्मरण करूंगा, देश का गौरव बढ़े ऐसा काम करूंगा, भारतीय समाज के हित में कार्यरत रहते हुए निरंतर राष्ट्रधर्म का पालन करूंगा। भारत माता की जय। हिन्दू धर्म की जय। छत्रपति महाराज की जय।

वीर शिवाजी ने 'हिन्दवी स्वराज्य' की संकल्पना में अपने साथियों के विश्वास को और पक्का करने के लिए कहा कि यह मेरी इच्छा नहल है, अपितु 'हिन्दवी स्वराज्य ही श्रलची इच्छा'। अर्थात यह हिन्दवी स्वराज्य की इच्छा श्वर की इच्छा है। ओजस्वी वाणी के कंपन और शुभ संकल्प की ऊर्जा से शिवालय का वातावरण प्रेरक हो गया था।

हिन्दवी स्वराज्य की प्रतिज्ञा की स्मृति को बनाए रखने के लिए श्री रायरेश्वर मंदिर के प्रथम मण्डप में एक बड़ा चित्र लगा है, जिसमें महादेव के समक्ष शिवाजी महाराज अपने साथियों के साथ प्रतिज्ञा कर रहे हैं। गर्भगृह में आज भी वह शिवलिंग,स्थापित है, जिनके समक्ष प्रतिज्ञा करके शिवाजी सोये हुएं समाज को जगाने निकल पड़े थे। गर्भगृह में लघु आकार का दिव्य शिवलिंग प्रकाशमान है। यहाँ भी सामने की दीवार पर हिन्दवी स्वराज्य की प्रतिज्ञा को प्रदर्शित करता बड़े आकार का चित्र है। इस स्थान पर मन में अध्यात्म का भाव जगाने के साथ ही साहस देने वाली ऊर्जा की अनुभूति होती है। (लेखक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्व विद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।)

"प्रतिबिम्ब"

एक व्यक्ति ने अपने गुरु से कहा, मेरे कर्मचारी, मेरी पत्नी, मतलबी हैं। कोई भी सही नहीं है मेरे बच्चे और सभी लोग भी क्या करूँ ? गुरु थोडा मुस्कुराये और उसे एक कहानी सुनाई।

एक गाँव में एक विशेष कमरा था जिसमे 1000 शीशे लगे थे। एक छोटी लड़की उस कमरे में गई और खेलने लगी। उसने देखा 1000 बच्चे उसके साथ खेल रहे हैं और वो उन प्रतिबिम्ब बच्चो के साथ खुश रहने लगी। जैसे ही वो अपने हाथ से ताली बजाती सभी बच्चे उसके साथ ताली बजाते। उसने सोचा यह दुनिया की सबसे अच्छी जगह है यहाँ वह सबसे ज्यादा खुश रहती है। वो यहाँ बार–बार आना चाहेगी। थोड़ी देर बाद इसी जगह पर एक उदास आदमी कहीं से आया। उसने अपने चारों तरफ हजारों दुःख से भरे चेहरे देखे। वह बहुत दुःख हुआ। उसने हाथ उठा कर सभी को धक्का लगाकर हटाना चाहा, तो उसने देखा हजारों हाथ उसे धक्का मार रहे है। उसने कहा यह दुनिया की सबसे खराब जगह है वह यहाँ दोबारा कभी नहीं आएगा, और उसने वो जगह छोड़ दी।

इसी तरह यह दुनिया एक कमरा है जिसमें हजारों शीशे लगे हैं। जो कुछ भी हमारे अंदर भरा होता है वो ही प्रकृति हमें लौटा देती है। अपने मन और दिल को बच्चों की तरह साफ़ रखें तब यह दुनिया आपके लिए स्वर्ग की तरह ही है।

''जय जय श्री राधे''

श्रीजी की चरण सेवा

चिनहट युद्ध
अंग्रेजों के विरूद्ध उपजे असंतोष की आक्रामक अभिव्यक्ति

राज गोपाल सिंह वर्मा
सेवानिवृत उपनिदेशक, सूचना उ. प्र.

1857 क्रांति को घटित हुए 165 वर्ष हो गए हैं पर अभी तक इसकी सब घटनाओं और परिस्थितियों का सामाजिक, बौद्धिक एवं अन्य कारकों का व्यापक विश्लेषण नहीं किया जा सका है। यह सब जानते हैं कि अवध की राजधानी लखनऊ में ईस्ट इंडिया कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों को रेजीडेंसी में हुई लंबी घेराबंदी इस कालखंड की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है, पर जिस युद्ध ने इस घटना की तत्कालिक परिस्थितियां बनाई जहां ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना की भयावह और शर्मनाक पराजय हुई, उसे भारतीय इतिहास ने विस्मृत कर दिया, जबकि वह देश के विद्रोही सैन्य बलों और स्थानीय लोगों के संघर्ष की गौरव गाथा है, जिसे इन पंक्तियों के लेखन ने पुस्तक 'संघर्ष की गौरव गाथा—चिनहट 1857' में उजागर करने का प्रयास किया।

चिनहट में 30 जून 1857 को भारतीय विद्रोही सैन्य बलों से ईस्ट इंडिया कंपनी के सैन्य बलों के साथ हुए युद्ध ने न केवल ब्रिटिश पक्ष को भारतीय विद्रोही बलों के जुनूनी सैनिकों और स्थानीय लोगों ने करारी और शर्मनाक हार दी थी, बल्कि उनको अगले कई महीनों तक हर पल मौत के साए में गुजारने जैसी घेराबंदी में रहने को मजबूर किया था। उस हार ने कंपनी के सैन्य बलों और फिरंगी अभिमान के प्रतीकों को नेस्तनाबूद कर दिया था। आखिरी समय तक ब्रिटिश पक्ष के उच्च अधिकारी यह समझ ही नहीं पाए कि चिनहट का युद्ध उनके लिए विजय की नहीं, एक बड़ी पराजय की कहानी लिख देने का प्रारब्ध लिए हुए आया है। यह युद्ध इतनी अल्पावधि का था (मात्र कुछ ही घंटों का) कि पूर्वान्ह नौ बजे से लेकर 11 बजे तक ईस्ट इंडिया कंपनी की तोपों, हाथियों, घोड़ों और हथियारों से सज्जित सेना के बचे हुए लोग बुरी तरह पराजित होकर रेजीडेजेंसी की ओर भागने लगे स्वयं को सुरक्षित करने में लग गए थे। चिनहट का युद्ध अचानक नहीं हो गया था। इसके लिए उसी तरह की परिस्थितियों का निर्माण हो रहा था, जैसे 10 मई को मेरठ के विद्रोह के पीछे विकसित हुई घटनाएं जिम्मेदार थीं। अगर सब कुंछ ठीक से चलता रहता, तो न कोई क्रांति होती और न ही लोगों को कोई शिकायत। फिरंगी शासन करते रहते और यहां के संसाधनों का दोहनकर हमें अंधेरे में धकेलते रहते।

इस युद्ध से एक बात और महत्वपूर्ण रूप से उभर कर सामने आई थी। स्थानीय लोगों ने अपनी सांस्कृतिक विरासत और संस्कारों के अनुरूप सिद्धकर दिखाया था कि वे किसी भी आक्रांता के विरूद्ध जी जान से लड़ने को तैयार है, पर मानवीयता उनके मानस का अटूट हिस्सा है, उनके वजूद में आत्मसात है, वे उससे भी पीछे नहीं हटने वाले। यही कारण था कि जब चिनहट के युद्ध में फिरंगियों ने हार के बाद हड़बड़ाहट में रेजीडेंसी की तरफ वापसी की तो लुटी—पिटी अवस्था में, जून की तपती गर्मी में उन भूखे—प्यासे अफसरों और सैनिकों को दूध—पानी पिलाने, उनकी सेवा—सुश्रूषा करने, खा्द्य सामग्री उपलब्ध कराने में आम लोगों ने जो संवेदनशील भावनाएं दिखाई, वे इन तथाकथित शिक्षित और आधुनिक, परंतु असंवेदनशील कहे जाने वाले फिरंगियों के लिए आंखे खोल देने वाली घटनाएं थीं।

फिरंगियों के खिलाफ धीरे—धीरे लखनऊ ही नहीं पूरे अवध प्रांत को माहौल कुछ इस तरह से आक्रोशित हो चला था कि यहाँ का हर इंसान जन भावनाओं के सम्मान में ईस्ट इंडिया कम्पनी की सत्ता का विरोध करने को सक्रिय हो चला था। फिर बात राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता की भी आ ठहरी थी। शहर और गांवों के हर किसी वाशिंदे को इस सत्ता से शिकायत थी। मूल बात यह थी कि जन—मानस ने अच्छी तरह समझ लिया था कि ये लोग व्यापारियों के चोले में आए आक्रांता हैं और हम यहाँ के मूल निवासी इस सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर के संरक्षक। हमारी जमीन और संसाधनों पर किसी विदेशी शक्ति का प्रभुत्व भला क्यों कायम रहे? चिनहट उसी असंतोष की एक आक्रामक अभिव्यक्ति थी।

क्या कभी आपने ध्यान दिया है कि ब्रिटिष पक्ष जब भी 1857 की बात करता है तो वे लोग भारतीय विद्रोहियों के विरूद्ध अनेक किस्से–कहानियां और अपनी वीरता के बखान किया करते है, परंतु चिनहट की हार को वे मात्र एक छोटी सी घटना, जो उनके आंकलन की कमी से उनके विरूद्ध चली गई थी, कहकर खारिज कर देते है। पर यह आपको सोचना है कि क्या यह बात सही है। सच बात यह है कि 1857 के भारतीय स्वतंत्रता इतिहास के प्रथम संग्राम के इस युद्ध में जिस जोरदार ढंग से फिरंगियों को घेरा गया, उसका उदाहरण न कभी पहले मिला, न बादे में।

इस दृष्टि से यह घटनाक्रम स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम चरण का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। बरकत अहमद के नेतृत्व में, इस्माइलगंज गांव के मैदान में सबसे पहले ब्रिटिश सैनिकों पर गोलियां चलाई गई जिससे दुश्मन के कई सैनिक मारे गए और देखते ही देखते बाजी भारतीय विद्रोहियों के हाथों में आ गई। काफी कशमकश के बाद तब ब्रिटिश अधिकारियों ने अपनी सेनाओं को पीछे हटने का आदेश दिया था। इस लड़ाई में लगभग 175 भारतीय योद्धा शहीद हुए थे।

यह बात किसी भी प्रबुद्ध नागरिक की समझ से परे है कि क्यों उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के चिनहट अथवा आसपास के इलाके में उन जुझारू लोगों की वीरता का एक विशाल स्मारक नहीं बनाया जा सकता? हमको गुलामियत की बेड़ियों के जंजाल के उस चुनौतीपूर्ण समय से निकलकर मुक्त हुए पुरखों के इन क्रांतिकारी कदमों की जानकारियां प्राप्त करने की चिंता होनी चाहिए। इस एक विशेष दिन, यानी 30 जून को हर वर्ष भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गौरव गाथा को नमन करना, हमें उस जुनून को नमन करने के समान होगा जिसने विदेशी आक्रांताओं से इस देश को मुक्ति दिलाने में जी–जान से योगदान दिया था।

श्रेष्ठ व्यवहार सम्बन्धी कुछ बातें

- जो पाना चाहते है, वह देना सीखें, सहयोग दें, सहयोग लें।
- सलाह ले सम्मान दे, सुख बाँटे दुःख बटाएं। हमारी कमी यह है कि सलाह भी हम दे और सम्मान भी हमें पाएं।
- दूसरों का छिद्रान्वेषण न करें, सद् गुणों को देखें उसे धारण करें। अपनों से बड़ो का सम्मान करें, छोटों की उपेक्षा नहीं, उन्हें स्नेह दे, उनसे पहल कर बात करें, उन्हें आगे बढ़ाएं, मिलनसार प्रवृत्ति बनाएं, दूसरों में रूचि लें।
- बातचीत में शिष्टाचार व अभिवादन का ध्यान रखें। उचित सम्बोधन देकर बात करें, मुस्कराकर, विनम्रतापूर्वक सहज ढ़ग से बात करें। अहंकार न झलके, सहज बने रहे।
- शेखी न बघोर, कथनी करनी में अन्तर न रखें, ऐसे लोगों की बहुत जल्दी कलई खुल जाती है।
- अपने आपको, अपने कार्यो को, शिक्षा को उपलब्धियों को बड़ा न माने, अपनी जुम्मेदारियों को बड़ा माने और निभाएं।
- गलती पर क्षमा करें, विवाद हो तो मौन हो जाएँ, दूसरां के मामले में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें।
- किसी के जन्म दिवस, सफलता, या खुशी के अवसर पर उसे बधाई देना न भूले। दुःख क घड़ी में ढ़ाढ़स जरूर बंधाएं।
- किसी से कुछ लिया हो तो उसे समय पर वापस करें। उपकार के लिए कृतज्ञता अर्पित करें। नैतिकता का ध्यान रखें। सामाजिक मर्यादाओं एवं वर्जनाओं के अनुरूप हमारा व्यवहार हो।
- प्रमाणिक व्यक्तित्व हेतु ''मातृवत पर दादेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत एवं आत्मवत् सर्व भूतेषु'' की दृष्टि रखकर व्यवहार करें। व्यवहार कुशल व्यक्ति की छवि समाज में विश्वसनीय, प्रमाणिक प्रेमास्पद, सम्मानीय की होती है।

खोजे पर गुण, अपने दोष, सीमित साधन में सतेष।
करो नही ऐसा व्यवहार, जो न स्वयं को हो स्वीकार।।

कड़ी मेहनत-पक्का इरादा

सुबह के समय प्रकृति एकदम शांत और अपने दिव्य नजारे में होती है। आज सुबह उठते ही मनीष जी ने अपनी आँख मलते हुए पत्नी कमला से पूछा, 'राजू दिखाई नहीं दे रहा है। आज स्कूल की छुट्टी भी है। ऐसे में इतनी सुबह वह कहां चला गया ?'

'आज तो अभी तक राजू की सुबह हुई ही नहीं है। कुछ देर पहले मैं जगाने गई थी तो वह गरही नींद में था। इसलिए मैंने उसे जगाना उचित नहीं समझा।' कमला चाय बनाते हुए बोलीं।

मनीष जी जल्दी से उठकर राजू के कमरे में पहुंच गए। पिता जी के स्पर्श से राजू की नींद खुल गई। इतनी सुबह पिता जी को अपने बिस्तर के पास देखकर घबराते हुए पूछा, 'पिता जी ! क्या हुआ ?'

'कुछ नहीं, बेटा। सुबह के नौ बज गए हैं, लेकिन तुम इतनी देर तक सो रहे हो। मुझे तुम्हारी फिक्र हो रही थी। तुम्हारी तबियत तो ठीक है न बेटा?'

'पिता जी ! मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है। बस, मैं कल रात में काफी देर तक जागता रहा था, इसीलिए।'

राजू एक होनहार बालक था और हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आता था, लेकिन इस बार परीक्षा को लेकर उसके अन्दर डर था। उसने उदास मन से कहा, 'पिता जी, आपको तो पता है न कि मैं हमेशा से अपनी कक्षा में प्रथम आता हूँ, लेकिन इस बार मेरी चिंता का सबब मेरी कक्षा में आया एक नया छात्र है, जो पढ़ने में बहुत होशियार है। उसने कल मुझे चुनौती दी है कि इस बार परीक्षा में मुझे पीछे छोड़ वह पूरी कक्षा में अव्वल आएगा। इसी बात को सोच-सोचकर मैं परेशान हूँ।'

'बस इतनी सी बात।' कहते हुए मनीष जी जोर से हंसने लगे। मनीष जी को हंसते हुए देख कर राजू रुआंसा होते हुए बोला, 'पिता जी, मुझे यहां तनाव से रातभर नींद नहीं आई और आपको यह छोटी सी बात लग रही है।'

तभी पिता जी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'बेटा, जीवन एक परीक्षा है। तुम अपनी मेहनत पर हमेशा भरोसा रखना, क्योंकि कठोर परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता है। जीवन की परीक्षाओं में किसी पुस्तक से प्रश्न नहीं पूछे जाते। न ही उनके लिए कोई कुंजी उपलब्ध होती है। जीवन की परीक्षा में कोई अंक नहीं मिलते हैं, परन्तु लोग यदि आपको आपके कार्यों की वजन से हृदय से स्मरण करें तो फिर समझ लेना कि आप अपने जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए हैं। फिर चाहे चुनौती कक्षा में पढ़ाई और परीक्षा को लेकर ही क्यों न हो ?' पिता जी की बात सुन राजू के होंठों पर मुस्कान आ गई।

'देश भक्ति मतलब सिर्फ ध्वज को लहराना नही है
बल्कि अपने देश को मजबूत और सशक्त बनाने में सहायता करना भी है।'

गुरू बिनु भव निधि तरइ न कोई

आदिगुरु परमेश्वर शिव ने दक्षिणामूर्ति रूप में समस्त ऋषिमुनियों को शिवज्ञान प्रदान किया था। इसकी स्मृति में गुरु पूर्णिमा महापर्व मनाया जाता है। मान्यता है कि गुरु पूर्णिमा को वेदव्यास का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन व्यासजी का पूजन किया जाता है। वेदव्यास भगवान विष्णु के अंश माने जाते हैं।

जीवन में अनेक गुरु आते हैं। सर्वप्रथम माता, फिर पिता गुरु होते हैं। उसके बाद विद्यालय में विद्यागुरु प्राप्त होते हैं। अध्यात्म की ओर जाने पर दीक्षागुरु जीवन में आते हैं। दत्तात्रेय ने जीवन में 24 गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने पेड़, पौधे, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सबको अपना गुरु बनाया। गुरु शब्द का संस्कृत में अर्थ होता है–अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना। गुरु किसी व्यक्ति विशेष को नहीं कहते, अपितु गुरु तत्व है, ज्ञान है, ज्योतिपुंज है, जो संपूर्ण चराचर जगत में व्याप्त है:

जिस ज्ञान की प्राप्ति के बाद मोह उत्पन्न न हो. दुखों का शमन हो जाए तथा परब्रह्म अर्थात स्वयं के स्वरूप की अनुभूति हो जाए ऐसा ज्ञान गुरु ही प्राप्त हो सकता है। गुरु पूर्णिमा (तीन जुलाई) पर विशेष.....

अखंडमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

भागवत महापुराण में कहा गया है :

चिंतामणिर्लोकसुखं सुरद्रुः स्वर्गसम्पदम्।
प्रयच्छति गुरूः प्रीतो वैकुण्ठं योगदुर्लभम्॥

अर्थात किसी व्यक्ति को चिंतामणि मिल जाए तो स्वर्ग के सभी सुख मिल जाते हैं, पर यदि गुरु तत्व प्राप्त हो जाए तो उसे वैकुंठ प्राप्त हो जाता है, जो योगियों को भी दुर्लभ है। श्रीरामचरितमानस में कहा गया है :

गुर बिनु भव निधि तरह न कोई।
जौं बिरंचि संकर सम होई॥

अर्थात गुरु के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता, चाहे वह ब्रह्मा जी और शंकर जी के समान ही क्यों न हो जिस ज्ञान की प्राप्ति के बाद मोह उत्पन्न न हो, दुखों का शमन हो जाए तथा परब्रह्म अर्थात स्वयं के स्वरूप की अनुभूति हो जाए, ऐसा ज्ञान गुरु कृपा से ही प्राप्त हो सकता है। इसीलिए कहा जाता है कि :

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमयतीतं निरञ्जनम्।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः॥

भगवान राम तथा भगवान कृष्ण पूर्णब्रह्म तथा 'गुरुणां गुरुः हैं, तथापि जब वह धराधाम पर आए तो उन्होंने भी गुरु तत्व के रूप में विश्वामित्र, वशिष्ठ जी, महर्षि सांदीपनि जैसे ब्रह्मनिष्ठ संतों की शरण में जाकर मानव मात्र को सद्गुरुदेव भगवान की महिमा का संदेश प्रदान किया। तभी तो गुरु सत्य को ब्रह्म समान कहा गया है :

गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

चराचर जगत में दो प्रकार की विद्याएं हैं परा और अपरा विद्या इन्हें ही उपनिषदों में श्रेय तथा प्रेय के नाम से

शेष भाग पेज 15 पर ......

हिन्दू सारी दुनिया में ज्ञान और दर्शन के लिए प्रसिद्ध

हृदय नारायण दीक्षित
पूर्व-विधान सभा अध्यक्ष

हिन्दू सारी दुनिया में ज्ञान और दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहे है। ज्ञान यहाँ पवित्र विषय रहा है। ज्ञान से सभी रहस्यों का अनावरण होता है। ज्ञान से धर्म, काम और मोक्ष मिलते हैं। हिन्दू ज्ञान अभीप्सु राष्ट्रीयता है। जड़ों से उखड़े वृक्षों पर फूल नहीं खिलते। पक्षी ऐसे वृक्षों पर गीत नहीं गाते। यू०जी०सी० ने नई शिक्षा नीति के अनुसरण में भारत की ज्ञान परंपरा को छात्रों अध्यापकों के लिए मार्गदर्शी बताया है। भारत को मूल से जोड़ने का कार्यक्रम बनाया है। ज्ञान का लक्ष्य सूचना पाना ही नहीं होता। ज्ञान, विज्ञान और दर्शन में विश्व कल्याण की प्रतिभूति है। भारत में ऋग्वेद के रचनाकाल के पूर्व से ही लोकमंगल हितैषी ज्ञान परंपरा है। स्थूल और अति सूक्ष्म पदार्थों के अणुओं का अध्ययन प्राचीन काल से ही जारी है। व्यक्त जगत के साथ अव्यक्त का ज्ञान भी पूर्वजों का प्रिय विषय रहा है। ज्ञान के प्रथम चरण से लेकर गहन ज्ञान मीमांसा भी होती रही है। ऋग्वेद के ज्ञान सूक्त (10.71) में इसी परिस्थिति का उल्लेख है, 'प्रारंभिक दशा में पदार्थों का नाम रखा जाता है। यह ज्ञान का पहला चरण है। इनका दोष रहित ज्ञान पदार्थों का गुण, धर्म आदि अनुभूति की गुफा में छुपा रहता है और अंतःप्रेरणा से ही उदभूत होता है।" पहले रूप फिर रूप का नाम सामान्य ज्ञान है। इसके बाद गुण धर्म।

वैदिक काल ज्ञान दर्शन का अरुणोदय काल है। जिज्ञासा और प्रश्न सशक्त ज्ञान उपकरण हैं। ज्ञान दर्शन की यही परपरा ऋग्वेद सहित चार वैदिक संहिताओं में विश्व की पहली ज्ञान सारिणी है। फिर उत्तर वैदिक काल में उपनिषद दर्शन है। फिर 6 प्राचीन दर्शनों में जिज्ञासा व तर्क के साथ सत्य दर्शन है। यही ज्ञान परंपरा बुद्ध व जैन दर्शनों में सम्मानीय है। ज्ञान प्रकट करने का प्रथम उपकरण है वाणी। वाणी का अनुशासन व्याकरण है। ज्ञान की इसी परंपरा में पाणिनि ने दुनिया का पहला व्याकरण लिखा है। इसके पहले यास्क वैदिक भाषा के अनुशासन पर निरुक्त लिखते हैं। पतंजलि योगसूत्र व भाषा अनुशासन लिखते हैं। योग विज्ञान अंतर्राष्ट्रीय है। लंदन के विद्वान एल० बाशम ने 'दि वंडर दैट वाज इंडिया' में भारतीय योग विज्ञान का विशेष उल्लेख किया था। कौटिल्य ने दुनिया का पहला अर्थशास्त्र लिखा है। आचार्य वात्स्यायन ने कामसूत्र लिखा। भरतमुनि ने पहला नाटयशास्त्र लिखा। इसी ज्ञान परंपरा में चरक और सुश्रुत संहिताएं आयुर्विज्ञान रूप में प्रतिष्ठित हुई। पाणिनि, पतंजलि, कौटिल्य, वात्स्यायन, भरतमुनि, चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर आदि सभी विद्वान अपने पूर्ववर्ती आचार्यों का उल्लेख करते हैं। वे अपने कथन को प्राचीन ज्ञान परंपरा से जोड़ते है। विज्ञान के विकास के लिए गणित का विशेष महत्व होता है। एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका में कहा गया है कि शून्य के अंक का अविष्कार संभवतः हिन्दुओं ने किया था। शून्य और शून्य के स्थानगत मूल्यों की जानकारी वैदिक काल में थी। विवाह संस्था का जन्म वैदिक काल में ही हुआ। प्राचीन काल में गीत, संगीत, चित्रकला और स्थापत्य सहित सभी ज्ञान अनुशासन फल फूल रहे थे। लेकिन काल परिस्थिति के प्रवाह में यह ज्ञान परंपरा टूट गई।

ब्रिटिश सत्ता के समय भारतीय ज्ञान परंपरा पर सुनियोजित आक्रमण हुए। पश्चिमी ज्ञान और सभ्यता का प्रभाव बढ़ा। यहाँ के विद्यालयों में पश्चिम की प्रशंसा और भारतीय ज्ञान को कमतर पढ़ाया जाने लगा इतिहास का विरूपण हुआ। वेदों को जानवर चराने वालों के गीत कहा गया। भारतीय दर्शन को उड़ान कहा गया। ब्रिटिश विद्वानों व उनके समर्थक भारतवासी विद्वानों ने दावा किया कि अंग्रेजी राज के पहले हम भारतवासी एक राष्ट्र नहीं थे। भारत को अंग्रेजों ने ही राष्ट्र बनाया है। गांधी जी ने इसका खंडन किया है। ब्रिटिश सत्ता भारत को असभ्य बता रही थी। उन्होंने ब्रिटिश संसद को विश्व संसदीय व्यवस्था की जननी बताया। गाँधी जी ने ब्रिटिश संसद के विरुद्ध तीखी टिप्पणी की। इसके हजारों वर्ष पहले वैदिक काल में सभा थी समितियां थीं राजव्यवस्था थी राजा का

निर्वाचन होता था। हिन्दू ज्ञान, विज्ञान व दर्शन से समृद्ध थे। आश्रमों में दर्शन, गणित व ज्योतिष के अध्ययन थे।

यूरोपीय विद्वानों ने भारतीय कला और सौंदर्यबोध को भी हेय बताया। भरतमुनि ने नाटयशास्त्र में नाटक को विश्व के लिए उपयोगी बताया था, "यह नाटय संसार में वेदों, विद्याओं और इतिहास की गाथाओं की परिकल्पना करने वाला लोगों के मनोविनोद का भी कर्ता होगा।" नाट्यशास्त्र परिपूर्ण कला है। भरतमुनि ने कहा है कि इस नाट्य में समस्त लोकों का अनुकीर्तन होता है। भरतमुनि ने नाटक के अभिनय पक्ष की प्रशंसा की। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने नाटक के अभिनय पक्ष पर ध्यान नहीं दिया। भरतमुनि ने संगीत और नृत्य परम्परा का भी उल्लेख किया है। यहाँ गीत संगीत आदि कलाओं के साथ नृत्य की भी परंपरा रही है। महाभारत और रामायण विश्व के प्रतिष्ठित महाकाव्य है। महाभारत में अर्जुन अज्ञातवास के समय गीत संगीत और नृत्य सीखते है। श्रीकृष्ण जैसा बासुरी वादक नाचता देवता दुनिया की किसी भी सभ्यता संस्कृति नहीं मिलता। वाल्मीकि रामायण में किश्किंधा नगरी में नृत्य का उल्लेख है। वैदिक काल से प्रारम्भ ज्ञान परंपरा महाभारत रामायण में भी सांस्कृतिक निरंतरता में है। वैदिक काल में भारत में सभी कलाओं का विस्तार हो चुका था। भरत ने नाटयशास्त्र में लिखा है कि, "नाटक में अंश ऋग्वेद से आया है। गीत वाला अंश सामवेद से व रसो को अथर्ववेद से लिया गया है। नाटयशास्त्र में नारद व स्वाति के नाम है। स्वाति के विषय में लिखा है कि, कमलपत्रों पर वर्षा की बूंदों से होने वाली धुन को सुन कर उनके मन में दाद्य निर्माण का विचार आया था। भरत ने नाटय और संगीत से जुड़े तमाम यंत्रों का उल्लेख किया है। गीत संगीत की चर्चा है। यह सब यूनानी दर्शन में नहीं मिलता। ऋषि सूर्योदय के पहले ऊमा देखते हैं। कहते हैं, "ऊषाएं शोभा और सौन्दर्य प्रकट करती है। यह नित्य नवीन होती है।" भारतीय दर्शन मे जो सुन्दर है वह सत्य है और जो सत्य है यह शिव है। सुकरात ने सुन्दर और शिव को एक बताया था। प्लेटो ने कहा कि सुन्दर परम और पूर्ण है। सुन्दर का नैतिक होना आवश्यक है। दार्शनिक प्लाटिनस ने सौदर्य को रहस्यपूर्ण बताया था योगी अरविन्द ने यूरोपीय और भारतीय कला का भेद बताते हुए लिखा था. "पश्चिमी मानस रूप के आकर्षण जाल में है। वह रूप सौंदर्य के कारण उसके प्रति आसक्त रहता है। भारतीय दृष्टि में रूप आत्मा का सृजन है।" सौदर्य की भावना एकाग्रता लाती है। अभिनव गुप्त ने इसे बीत विघ्ना प्रतीति कहा। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य ऋग्वेद में है। संगीत के सात सुरों की चर्चा है। सामवेद ज्ञान मान है। यजुर्वेद में भी छंद विचान है। अथर्ववेद में भरा पूरा संसार है। सौंदर्यशास्त्री के० एस० रामास्वामी ने इंडियन एस्थेटिक्स' में लिखा था, "भारत में सौंदर्य शास्त्र की हजारों वर्ष पुरानी ज्ञान परंपरा है।" गीता (अध्याय 4.1—3) मे श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान परंपरा बताई, "यह प्राचीन ज्ञान मैंने विवस्वान को बताया था। विवस्वान ने मनु को मनु ने इक्ष्वाकु को बताया था। परंपरा से यही ज्ञान ऋषि जानते आए हैं। काल प्रवाह में यह ज्ञान नष्ट। हो गया हे अर्जुन वही पुरातन ज्ञान में तुमको बता रहा हूँ।" भारतीय ज्ञान परंपरा में लोकहित के सभी विषय सम्मिलित हो।

गुरू बिनु भव का शेष भाग ....

जानते हैं जो इन विद्याओं का ज्ञान कराकर शिष्य को मोक्ष प्रदान करे, ऐसा गुरु दुर्लभ है। कहा भी गया है।

दुर्लभो विषयत्यागो दुर्लभं तत्त्वदर्शनम्।
दुर्लभा सहजावस्था, सद्गुरोः करूणां विना।।

अर्थात यह दुर्लभ सहजावस्था गुरु तत्व की कृपा के बिना नहीं मिलती। कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास की स्मारिका रूपी आषाढ़ी पूर्णिमा पर ब्रह्मसूत्रादि के पारायण की परंपरा है। महर्षि वेदव्यास ने चारों वेदों का संपादन किया, अष्टादश पुराण, उपपुराणादि सहित लक्षश्लोकात्मक ज्ञान से परिचित कराया।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर प्रकृति जल वर्षण से नूतनता का आधान करना प्रारंभ करती है। इससे यह संदेश लेना चाहिए कि हम सबको गुरु शरणागति प्राप्त कर अध्यात्म—साधना रूपी नवीन गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र रूपी बीज को अपने भीतर पल्लवित पुष्पित करना चाहिए।

विभाजन, त्रासदी, परिणाम व सावधानी

राजेंद्र सिंह बघेल
5बी / बी 110 वृन्दावन आवासीय योजना लखनऊ

विभाजन, त्रासदी, परिणाम व सावधानी वे महान वीर आत्माएँ जो देश विभाजन के समय भयानक एवं विषम परिस्थितियों में फंसे अगणित निर्दोष लोगों की रक्षा करते हुए अपने प्राण गवां बैठे उनको कौन भूल सकता है। इतिहास में ऐसे नरसंहार और विनाशकारी घटनाएँ न मिली हैं–न मिलेंगी जिसमें अनगिनत लोग अपनी जन्मभूमि से विरत हुए और उनका सब कुछ लुट–पिट गया। हाँ ! यही थी विभाजन की वह विभीषिका जिसका दर्द वर्षों पहले उन तमाम पीड़ित लोगों की जुबानी हमने सुना था।

आखिर विभाजन हुआ क्यों ?

क्यों हुआ था देश का बंटवारा ? कौन सी वे परिस्थितियाँ थी ? कौन थे वो जिम्मेदार लोग जो इस त्रासदी से देश को बचाने व असंख्य लोगों की जान–माल की रक्षा कर सकते थे ? क्या इंडियन नेशनल काँग्रेस ने भारतीय जनता का देशभक्तिपूर्ण आवाहन किया होता तो देश की अखंडता बनाए रखने हेतु सर्वोच्च त्याग करने लाखों की संख्या में लोग आगे न बढ़ते .... इसका उत्तर जानने का प्रयत्न किया तो श्रद्धेय एच0 वी0 शेषाद्री द्वारा लिखित हिन्दी रूपांतरित पुस्तक "और देश बंट गया" पुस्तक के प्राक्कथन में श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी द्वारा प्रस्तुत प्रमाणित जानकारी इस तरह प्राप्त हुई।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने 1960 में लियोनार्ड मोसले को यह बताया था, "सच्चाई यह है कि हम थक चुके थे और आयु भी अधिक हो गई थी। हममे से कुछ ही लोग जेल जाने की बात कर सकते थे, और हम अखंड भारत पर डटे रहते, जैसा कि हम चाहते थे तो पक्का था कि हमे भी जेल जाना पड़ता। हमने देखा की पंजाब में आग भड़क रही है और यह भी जाना की प्रतिदिन मार–काट हो रही है। बटवारे की योजना ने एक रास्ता निकाला और हमने उसे स्वीकार किया "भारत के एक राजनेता, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और भारतीय संविधान सभा के सदस्य श्री एन0 वी0 गाड़गिल (काका साहब गाड़गिल) ने स्वीकार किया "देश की मुख्य राजनीतिक शक्ति भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस थी और उसके नेता बूढ़े हो चले थे, थक चुके थे।

वे रस्सी को इतना अधिक नहीं खीचना चाहते थे कि वह टूट जाये और किए धरे पर पानी फिर जाये"। तत्कालीन काँग्रेस के नेतृत्व ने देश को निराश किया। विभाजन के पूर्व हुई अखिल भारतीय काँग्रेस समिति की बैठक में पूज्य महात्मा जी ने कहा–"मैं विभाजन का विरोधी हूँ किन्तु आपको परामर्श देता हूँ कि इसे स्वीकार कर लें क्योंकि आपके नेता इसे स्वीकार कर चुके हैं और हम इस परिस्थिति में नहीं हैं कि नेतृत्व को तुरंत बदल सकें। यदि मेरे पास समय होता तो क्या मैं इसका विरोध ना करता ? किन्तु मैं काँग्रेस के वर्तमान नेतृत्व को चुनौती नहीं दे सकता और उसके प्रति लोगों की आस्था नष्ट नहीं कर सकता। ऐसा मैं तभी करूंगा जब मैं उनसे यह कह सकूँ–लीजिये यह रहा वैकल्पिक नेतृत्व। ऐसे विकल्प के निर्माण का मेरे पास समय नहीं रह गया अतः इस कड़वी दवा को मुझे पीना ही पड़ेगा। आज मुझमे वैसी शक्ति होती तो मैं अकेला ही विद्रोह की घोषणा कर देता" वह विनाश जो सब कुछ स्वाहा कर गया परिणामस्वरूप विभाजन के निर्णय के बाद पंजाब और बंगाल में जो भयंकर घटनाएँ घटी उसका वर्णन करना बहुत मुश्किल है।

यद्यपि लॉर्ड माउंटबैटन के निर्देशानुसार सीमा पर पचास हज़ार जवान नियुक्त किए गए थे जिससे बटवारे के क्रम में रक्त की एक बूंद भी धरती पर न गिरने पाये। उन्होने कहा की यदि तनिक सा भी कहीं कोई आंदोलन होगा तो मैं ऐसा कदम उठाऊंगा कि उसके जन्मते ही उसका गला घोट दूँ। किसी ने भी यदि दंगा करने की कोई कोशिश की तो उसे दबाने के लिए टैंक और विमान का उपयोग करने से भी नहीं चूकूंगा पर वाइसरॉय की यह गर्वोक्ति निरा डींग बनकर रह गई। पश्चिमी पंजाब में मुसलमानो ने हिन्दुओं का भयंकर नरसंहार किया और

पूरे पंजाब में हिंदुओं ने उसका भारी प्रतिशोध लिया। मानवीय त्रासदी के इस इतिहास में कुछ इक्के–दुक्के उदाहरण भी मुश्किल से मिलेंगे।

इस वीभत्स काण्ड में ब्रिटिश सेनानायकों का खतरनाक रोल इस विनाशकारी घटना के प्रति हमारे नेता अत्यंत उदासीन थे। उन्हे तभी होश आया जब सबकुछ उनके नियंत्रण से बाहर हो चुका था यह संकट भयानक व बहुत गंभीर था। नेहरू जी विमान द्वारा जब पंजाब पहुंचे और उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया तो सारा दृश्य देखकर वह अपने को किंकर्तव्यविमूढ़ सा महसूस कर रहे थे। क्रूरता क्या होती है ? अपनी आँखों से उन्होने देखा। इस झुलसती आग में जनता की अदला–बदली के समय जिन्ना के प्रस्ताव को ठुकराकर हमारे नेता पाकिस्तान क्षेत्र के हिंदुओं को यह उपदेश दे रहे थे कि जो जहां है वहीं रहे। गांधीजी ने हिंदुओं को सलाह दी की वे ध्येय व अहिंसा से स्थिति का मुक़ाबला करें, यदि जरूरत समझें तो अपने प्राण देकर इन मूल्यों की रक्षा करें। पर होना क्या था ? सामान्य हिन्दू जनमानस इस हत्याकांड जिसमें वह बुरी तरह फँस चुके थे अपने नेताओं के उच्च आदर्शों का पालन नहीं कर सके। घर–द्वार छोड़कर भागने लगे बचे–खुचे मानव कंकालों का समूह सुरक्षित स्थानो की ओर बढ़ने लगा। अपना सब कुछ गंवाकर अपने परिवारीजनों को खो चुके थे। इन सारी घटनाओं के समय तत्कालीन भारतीय सेनापति क्लाउड अर्चनलेक की भूमिका तथा सीमा सुरक्षा दल की भी भूमिका संदिग्ध व आपत्तिजनक मानी गई। समय बीत गया अब हम सचेत रहें देश की बटवारे की तह में हम जाएँ तो स्पष्ट यह ध्यान आता है की अंग्रेज़ो की फूट डालो व राज करो की नीति व उनकी जिन्ना को बढ़ावा देने तथा काँग्रेस की ढुलमुल नीति से इस बात को बल मिला। मुस्लिम लीग की तुष्टीकरण की नीति को ठुकराना एवं पाकिस्तान की मांग को आरंभ से ही एक सिरे से खारिज करके देश के विभाजन को रोकना कठिन तो था पर असंभव कतई ना था। हमें यह स्मरण रखना होगा की पूज्य महात्मा जी ने जिस विवशता का व असहाय होने का परिचय उस समय दिया था ऐसी विवशता का अनुभव करने की बात पुनः भारतवर्ष की जनशक्ति पर कभी न आए। इसे सतर्कता से देखना होगा, साथ ही नेतृत्व का चयन करते समय नीर–क्षीर का उपयुक्त विचार भी हमें करते रहना होगा।

जीवन में सदा अच्छे कार्य ही करें

एक स्त्री के विवाह के 20 साल बाद उसे पुत्र सन्तान की प्राप्ति हुई किन्तु दुर्भाग्यवश 20 दिन में वो सन्तान मृत्यु को प्राप्त हो गयी। वो स्त्री हद से ज्यादा रोई और उस मृत बच्चे का शव लेकर एक सिद्ध महात्मा के पास गई। महात्मा से रोकर कहने लगी–'मुझे मेरा बच्चा बस एक बार जीवित करके दीजिये, मात्र एक बार मैं उसके मुख से 'माँ' शब्द सुनना चाहती हूँ। स्त्री के बहुत जिद करने पर महात्मा ने 2 मिनट के लिए उस बच्चे की आत्मा को बुलाया। तब उस स्त्री ने उस आत्मा से कहा–''तुम मुझे क्यों छोड़कर चले गए ? मैं तुमसे सिर्फ एक बार 'माँ' शब्द सुनना चाहती हूँ।

उस आत्मा ने कहा–'कौन माँ ? कैसी माँ ! मैं तो तुमसे कर्मो का हिसाब–किताब करने आया था।' स्त्री ने पूछा–'कैसा हिसाब !' आत्मा ने बताया–'पिछले जन्म में तुम मेरी सौतन थी, मेरे आँखों के सामने मेरे पति को ले गई, मैं बहुत रोई तुमसे अपना पति माँगा पर तुमने एक न सुनी। तब मैं रो रही थी और आज तुम रो रही हो ! तब मेरा पति गया था, आज तुमने अपनी सन्तान खोई है। बस मेरा तुम्हारे साथ जो कर्मों का हिसाब था तो मैंने पूरा किया और मर गया।' इतना कहकर आत्मा चली गयी। उस स्त्री को झटका लगा। उसे महात्मा ने समझाया–'देखो मैंने कहा था न कि ये सब रिश्तेदार माँ, पिता, भाई, बहन सब कर्मों के कारण जुड़े हुए हैं। हम सब कर्मो का हिसाब करने आये हैं। यही हमारे रिश्तों की नियति है, इसलिए बस अच्छे कर्म करो ताकि हमें बाद में भुगतना ना पड़े।' वो स्त्री समझ गयी और अपने घर लौट गयी। अतः हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए।

बच्चों व किशोरों में फैलती स्मार्टफोन की लत

टेक्नोलॉजी के नित नए आविष्कार प्रायः मानवहित के लिए होते रहते हैं, लेकिन जब हम इसका सदुपयोग नहीं कर पाते तो ये वरदान की जगह अभिशाप बन जाते हैं। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया आदि संचार क्रांति युग के कुछ अभिनव वरदान है, जिन्होंने परिस्थितियों की चुनौतियों के बीच जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाया है।

कोविड काल की विकट स्थिति को पार करने में इन्होंने निर्णायक भूमिका निभाई थी, लेकिन इनकी लत से जुड़ा चिंताजनक पहलू भी अब सामने आ रहा है। आज इंटरनेट और सोशल मीडिया की लत शहरों से निकलकर कस्बों गाँवों तक पहुँच चुकी है। हर वर्ष इनके उपयोगकर्ता की संख्या करोड़ों में पहुंचती जा रही है।

पिछले पाँच वर्षों में डिजिटल माध्यम पर हुए एक शोध अध्ययन के अनुसार हर वर्ष 20 से 25 प्रतिशत डिजिटल उपयोगकर्ता बढ़े हैं। वर्ष 2015 में ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 9 प्रतिशत जनसंख्या इंटरनेट का उपयोग कर रही थी, जो वर्ष 2018 में 25 प्रतिशत तक पहुँच गई।

आज इनकी संख्या 56 प्रतिशत बताई जा रही है। एक आंकलन के अनुसार, वर्ष 2026 तक देश में इंटरनेट के उपयोगकर्ताओं की संख्या एक अरब पार हो जाएगी। इंटरनेट व सोशल मीडिया के उपयोगकर्ताओं की बढ़ती संख्या के साथ इनकी लत के शिकार लोगों की संख्या भी बढ़ती जा रही है, जिनमें बच्चों व किशोरों की संख्या बढ़ी चढ़ी है।

प्रयागराज के कॉल्विन अस्पताल में चल रहे मोबाइल नशा मुक्ति केन्द्र में हर माह सौ से अधिक मामले उपचार के लिए पहुँच रहे हैं। संख्या को देखकर चिकित्सक भी हैरान हैं, क्योंकि कोरोना के पहले माह में दो–चार मामले ही इस तरह के आते थे, लेकिन दूसरी लहर के बाद प्रतिदिन चार से पाँच रोगी उपचार के लिए लाए जा रहे हैं।

इनमें 50 प्रतिशत किशोर हैं तथा शेष में बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक शामिल हैं। मालूम हो कि इंटरनेट की लत से ग्रस्त बच्चों– किशोरों की काउंसलिंग के लिए बंगलूरू स्थित निम्हांस (राष्ट्रीय मानसिक जाँच एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान) देश का पहला क्लीनिक है। इसके साथ दिल्ली के एम्स, पुणे और यूपी के तीन जिलों तथा अमृतसर में भी केंद्र प्रारंभ हुए हैं।

निम्हांस के अनुसार बच्चों को मोबाइल औसतन 10 वर्ष की में मिलता है, इनमें से 12 वर्ष की आयु तक 50 प्रतिशत बच्चे सोशल मीडिया का उपयोग करने लग जाते हैं। हर सप्ताह देशभर में मनोचिकित्सकों के पास सोशल–मीडिया की लत से परेशान औसत 10 ऐसे मामले आते हैं, जो 12 वर्ष से भी कम आयु के हैं।

इस तरह शहरों में जहाँ स्मार्टफोन नशामुक्ति केंद्र के रूप में हि–एडिक्शन सेंटर खुल रहे है. वहीं गाँवों–कस्बों में भी इसकी आवश्यकता अनुभव हो रही है। समस्या की विकरालता को देखते हुए विशेषज्ञों का तो यहाँ तक मानना है कि प्रत्येक जिले में इंटरनेट नशामुक्ति केंद्र खुलने की आवश्यकता है, जहाँ न मात्र इंटरनेट, बल्कि सभी डिजिटल प्लेटफॉर्म को लेकर परामर्श, निगरानी और उपचार की सुविधा उपलब्ध हो सके और साथ ही हर जिले के सटीक आँकड़े प्राप्त हो सकें।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार लगभग 38 प्रतिशत बच्चों के फेसबुक खाते बने हुए हैं. यहीं 24 प्रतिशत बच्चे इंस्टाग्राम पर सक्रिय हैं। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश में 10 वर्ष से छोटी आयु के बच्चे भी सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं।

किशोरों में शॉर्ट विडियोज व यू–टयूब का चस्का लग गया है। कुछ तो स्वयं चैनल चला रहे हैं और यह नशा कुछ इस कदर हावी हो रहा है कि वे इसे सहजता से छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। वास्तव में, लॉकडाउन के दौरान इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ऑनलाइन पढ़ाई के अपरिहार्य माध्यम के रूप में उभरकर आए थे, जिसमें बच्चों को इनका खुलकर उपयोग करने का अवसर मिला, लेकिन इनके उपयोग की समीक्षा नहीं हो पाई जिसके अभाव में बच्चे गुपचुप गेम खेलने, बीडियोज देखने व सोशल मीडिया के आदी हो गए।

माता–पिता व अभिभावकों ने अधिकांशतः इस पर ध्यान नहीं दिया और न ही रोका–टोका, क्योंकि एक तो वे स्वयं ही व्यस्त रहते थे, फिर दूसरा वे नहीं चाहते कि बच्चे उन्हें तंग करें। अब बच्चे इसकी लत का इतना शिकार हो चुके हैं कि टोकने पर रूठकर खाना–पीना तक छोड़ रहे हैं और अतिरेक में आत्मघाती कदम तक उठाने से नहीं चूक रहे। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से मेधावी बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही है, उनके परिणाम बिगड़ रहे हैं। मोबाइल से दूर रखने पर बच्चे अवसाद में पढ़ रहे है और हिंसक हो रहे हैं।

नोएडा के एक कॉलेज में मही मोबाइल फोन की व्यवस्था घरवालों से न होने पर उस कॉलेज की छात्रा ने वीडियो कॉल करके अपनी सारी पुस्तकों को जला दिया। इसी तरह घरवालों के साथ हिंसक एवं अपराधिक घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। अतिरेक में बच्चे आत्महत्या तक करने की कोशिश करते देखे जा रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इन घटनाओं में ऑनलाइन गेम, सोशल मीडिया व इंटरनेट पर घंटों उलझे रहने से बच्चों व किशोरों में हिंसक व्यवहार पनप रहा है। अध्ययन के अनुसार सोशल मीडिया पर सक्रिय 10 में से 3 बच्चे अवसाद, भय, तनाव, चिंता के साथ चिड़चिड़ेपन के शिकार हैं। किसी का मन पढ़ाई में नहीं लगता, तो कुछ बिना फोन के भोजन तक नहीं कर पाते।

निम्हांस के अनुसार देश में 73 प्रतिशत बच्चे मोबाइल का उपयोग करते हैं, इनमें से 30 प्रतिशत मनोरोग से पीड़ित हैं। साथ ही लड़कियों साइबर बुलिंग का शिकार होकर अवसादग्रस्त हो रही हैं। दिल्ली एम्स में हर शनिवार संचालित क्लीनिक में साइबर बुलिंग के मामले आ रहे हैं। इनमें अधिकांश कॉलेज में पढ़ने वाली छात्राएँ हैं।

ऑनलाइन स्टडी एंड इंटरनेट एडिक्शन शोध अध्ययन के अनुसार, 50 प्रतिशत से अधिक साइबर बुलिंग के मामले दर्ज नहीं हाते, क्योंकि लड़कियाँ अपनी परेशानियाँ साझा नहीं कर पाती है और धीरे–धीरे अवसार से ग्रस्त होने लगती है।

एम्स, नई दिल्ली के एक अध्ययन के अनुसार यहाँ हर माह 15 से 16 बच्चे काउंसलिंग के लिए आते हैं, जिनमें 90 प्रतिशत तक मध्यम या अति गंभीर स्थिति वाले हैं अर्थात् लक्षण बीमारी के तीसरे या चौथे चरण जैसे दिखाई दे रहे हैं। ऑनलाइन लत (एडिक्शन) के लक्षण क्या हैं, इसकी जानकारी रखना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यदि कोई स्क्रीन के सामने लंबे समय तक चिपका रहता है, तो यह एक बड़ा लक्षणहै। साथ में पढ़ाई या किसी काम में मन नहीं लगना, कार्यक्षमता का घटना, चिड़चिड़ापन, नींद न आना, संयम व धैर्य खोना, बात–बात पर गुस्सा आना आदि इस लत के चिंताजनक लक्षण हैं, जिनके पाए जाने पर सचेत होने की आवश्यकता है। एक अध्ययन के अनुसार छह में से एक सोशल मीडिया का उपयोगकर्ता किसी–न–किसी रोग से ग्रस्त होता है। इनमें अवसाद, चिंता के अतिरिक्त उच्च रक्तचाप, एनीमिया, मोटापा, मधुमेह जैसे रोग हो सकते हैं।

दिल्ली एम्स में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर स्पष्ट हुआ था कि 13.4 प्रतिशत युवा मोबाइल की लत के इस कदर शिकार हो चुके हैं कि उनके आपसी रिश्ते खतरे में है व आगे बढ़ने के अवसरों को खो चुके है अर्थात् स्मार्टफोन उनके जीवन में उत्कर्ष व प्रगति का माध्यम होने के बजाय उनके निशा कारण बन रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार–बच्चों व किशोरों को बस से बाहर निकालने के लिए प्रारंभिक दौर में दवाओं की बहुत कम पड़ती है। अधिकांश मामले उचित परामर्श (काउंसलिंग) के आधार पर ठीक हो जाते हैं।

इस तरह यहाँ अभिभावकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। मनोरोग विशेषज्ञों के अनुसार जो बच्चे दिन

शेष भाग पेज 21 पर ......

आखिर हलंत होता क्या है

डॉ0 बुद्धिनाथ मिश्र
देहरादून

भगवान शिव के अर्धनारीश्वर रूप को यदि हम प्रत्यक्ष देखना चाहें तो देवनागरी का एक–एक अक्षर अर्धनारीश्वर है, क्योंकि प्रत्येक अक्षर में स्वर और व्यंजन समाहित नर–नारी के रूप में है। बिना स्वर के व्यंजन का स्वतंत्र उच्चारण नहीं हो सकता। स्वर और व्यंजन के स्वरूप को हम गिलास और पानी के रूप में भी देख सकते हैं। पानी व्यंजन है और गिलास स्वर। गिलास के आकार से जैसे पानी का आकार बदलता है, उसी प्रकार स्वर के आकार से व्यंजन का आकार बदलता है। इस प्रकार ककहरे का प्रत्येक अक्षर विभिन्न स्वरों के अनुसार व्यंजन के उच्चारण का द्योतक है। जहाँ स्वर नहीं होता है, वहाँ व्यंजन हलंत माना जाता है, जैसे 'अर्थात्' में त हलंत है, इसे बताने के लिए त् लिखा जाता है।

इसे हलंत क्यों कहते हैं ? इसको जानने के लिए हमें महर्षि पाणिनि की शरण में जाना पड़ेगा, जिन्होंने आठ अध्यायों वाले महान ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' के प्रारंभ में 14 माहेश्वर सूत्रों को स्थापित किया है, जो ईश्वरीय सृजन हैं और मानव जाति की समस्त भाषाओं के मूलाधार हैं। ये बीज ध्वनियां ही हृस्व, दीर्घ, प्लुत के भेद से सभी भाषाओं को संभालती हैं।

वे 14 माहेश्वर सूत्र हैं–

अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरटलण्। ञमङणनम्। झभञ्। घढधष्। जबगडदश्। खफछठथचटतव्। कपय्। शषसर्। हल्।

संस्कृत व्याकरण में इन्हें अक्षर समाम्नाय (समूह) कहा जाता है। अक्षर न क्षरति इति अक्षर का कभी नाश नहीं होता। इसलिए ये वर्ण परब्रह्म के प्रतीक हैं। वर्ण और अक्षर एक हैं। इन सूत्रों से प्रत्याहार बनाया जाता है। हलंत (हल्–अंत) का हल् भी प्रत्याहार है। प्रत्याहार बनाते समय सूत्र के अंतिम वर्ण को नहीं गिना जाता। केवल अंतिम वर्ण छिलके की तरह बचा रहता है। जैसे अण् प्रत्याहार में अ इ उ तीन वर्ण आएंगे और अक् प्रत्याहार में अइउऋलृ के पांच वर्ण। इस प्रकार जोड़कर देखिए तो अच् प्रत्याहार में सारे स्वर वर्ण आ जाएंगे और हल् प्रत्याहार में सारे व्यंजन वर्ण। प्रत्याहार बीच के वर्ण से लेकर किसी भी सूत्र के अंतिम व्यंजन वर्ण तक बन सकता है। जैसे इक् प्रत्याहार में इउऋलृ वर्ण आएंगे और यण प्रत्याहार में यवरल।

अब अगर आपसे पूछें कि इति और आदि (इति+आदि) इन दो शब्दों के मिलने पर 'इत्यादि' कैसे बन गया? इसमें य कहाँ से आ गया? तो इसके लिए 'अष्टाध्यायी' में एक सूत्र है–इको यणचि (इक यण् अचि) इकः माने इक् का, अचिमाने अच् परे रहने पर अब पूरे सूत्र का अर्थ हुआ इ उ ऋ लृ के स्थान पर यण हो, अच् परे रहने पर इक् प्रत्याहार में हैं इ ये चार वर्ण। इनके स्थान पर क्रमशः होंगे यणू प्रत्याहार के यवरल ये चार वर्ण, लेकिन यह तभी होगा, जब आगे अच् प्रत्याहार हो। अच् प्रत्याहार में सारे स्वर वर्ण आ जाते हैं। इस प्रकार अजंत (अच्+अंत) वह हुआ, जिसके अंत में स्वर हो और हलंत वह हुआ, जिसके अंत में व्यंजन हो। 'हयवरट' के से लेकर 'हल्' के ल् तक में सारे व्यंजन वर्ण आ जाते हैं। अब आप समझ गए होंगे कि हलंत क्या होता है?

महर्षि पाणिनि ने इन प्रत्याहारों के आधार पर सूत्र बनाकर संक्षिप्तीकरण की जो रीति चलाई, उसका यथाशक्ति अनुसरण विश्व की अन्य भाषाओं में हुआ, मगर महर्षि पाणिनि की दिव्य चेतना को छूना न किसी से संभव हुआ, न कभी किसी से होगा ?

"गूंज रहा है दुनिया में हिन्दुस्तान का नारा,
चमक रहा है आसमान में तिरंगा हमारा।।"

राष्ट्र प्रेम

देवेन्द्र तिवारी
संकलनकर्ता

पन्द्रह अगस्त को स्वतंत्रता हुई थी प्राप्त,
देशवासियों ने खूब आनंद मनाया था।
गृह में गली में द्वार-द्वार कोठरी में तुंग,
तरल तिरंगा झंडा वीरों ने लगाया था।
भारत था खुशी भारतीय को था महान हर्ष,
शब्द वन्देमातरम प्रचण्ड रूप छाया था।
आया था नवीन जोश भारत के वीरों में,
होकर निशंक झंडा ऊँचा कर दिखाया था ।। 1।।
तीन रंग झंडे में त्रिलोक यश छाया हुआ,
ब्रह्मा विष्णु शंभु का स्वरूप लिए न्यारा है।
पीत वर्ण ब्रह्मा सृष्टि करता कहाते सदा
श्याम वर्ण विष्णु जग पोषण संभाला है।
श्वेत वर्ण शंभू जग शासक नवीन बने,
त्रय देव ही ने सब जगत पसारा है।
सृष्टि के विधायक बसे हैं देव झंडा मध्य,
सृष्टि है अमर झंडा अमर हमारा है ।। 2 ।।
जब लौ बहै गंग बसुन्धरा पै धरा,
शीष पर शेष उठाता रहे ।
ससि भानु उवै जब लौ नभ में,
ध्रुवता ध्रुव धर्म निभाता रहे।
जग से जगदीश का नाता रहे,
यह सृष्टि रहे वह विधाता रहे ।
तब तक या झंडा तिरंगा अमर,
इस भारत पर लहराता रहे ।। 3।।

बच्चों व किशोरों में का शेष भाग ....

में चार से छह घंटे तक ऑनलाइन रह रहे हैं, उनमें समय रहते लक्षण पहचानना आवश्यक है, लेकिन अभिभावकों को उन पर अधिक प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक हस्तक्षेप से कई बार बच्चों की परेशानी बढ़ती देखी गई है और सुधार के बजाय बिगाड़ अधिक होता है। इनके साथ समझदारी व संवेदनशीलता भरा व्यावहार अपेक्षित रहता है। साथ ही माता—पिता एवं अभिभावकों को बच्चों के लिए स्वयं उदाहरण बनना चाहिए।

विद्वजनों के अनुसार- अभिभावकों को स्वयं उदाहरण बन बच्चों को प्रेरित करना होगा। यदि वे बच्चों को समय नहीं देते व स्वयं ही मोबाइल से चिपके रहते हैं, तो बच्चों को कैसे इसके सही उपयोग का परामर्श दे सकते हैं। परिवार में साथ रहने व बच्चों को समय देने पर ही वे एक—दूसरे को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं व प्रभावी रूप में सहायता कर सकते हैं। अभिभावकों की जागरुकता के साथ उन्हें इंटरनेट की समझ भी विकसित करनी चाहिए। उन्हें पता हो कि बच्चा किस तरह से इसका उपयोग कर रहा है। बच्चों व किशोरों में व्यावहारिक बदलाव के प्रारंभिक लक्षणों के बारे में स्वयं जागरूक हो व उनके उपचार के लिए समय रहते कदम उठाएँ। यदि स्थिति गंभीर हो जाए तो मनः चिकित्सक व डि—एडिक्शन सेंटर की सहायता लें।

चिकित्सकों के अनुसार- छह माह की काउंसलिंग और मनः चिकित्सा से 80 प्रतिशत तक रोगी ठीक हो जाते हैं। अधिक गंभीर स्थिति तक पहुँचे 20 प्रतिशत रोगियों को दवाएँ भी देनी पड़ती हैं। इनका उपचार एक वर्ष तक चलाना पड़ता है। सप्ताह भर सोशल मीडिया से दूर रखने पर भी लत को छुड़ाने में मदद मिलती है। हालाँकि यह बहुत कुछ रोगी की स्थिति पर निर्भर करता है। इस तरह स्मार्टफोन के बढ़ते उपयोग व इससे जुड़ी समस्याओं को लेकर व्यापक स्तर पर जागरूकता समय की माँग है। अपने परिवार के बच्चों, किशोरों व युवाओं की ऑनलाइन आदतों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे भी महत्वपूर्ण है स्वयं का सकारात्मक उदाहरण र प्रस्तुत करने का, जिससे परामर्श का अपेक्षित प्रभाव पड़ सके।

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप

महाराणा उदयसिंह ने अपनी कनिष्ठ रानी के आग्रह पर उसके पुत्र जगमल्ल को अपनी मृत्यु से पूर्व ही अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। प्रताप ने पिता की इच्छानुसार, प्रभु रामचन्द्र के आदर्श का पालन करते हुए सिंहासन त्याग कर मेवाड़ से दूर कहीं जाने की तैयारी कर ली परन्तु वहाँ के सरदार भली भाँति जानते थे कि आज मेवाड़ पर ही नहीं, सारे भारत पर मुगलों का आतंक फैला हुआ है। इस संकटकाल में मेवाड़ की तथा हिन्दू गौरव की रक्षा केवल प्रताप सिंह ही कर सकते हैं। इसलिए चूड़ावत सरदार कृष्ण सिंह तथा प्रमुख सेनापति झालाराव के प्रयासों से फाल्गुन सुदी 15 विक्रमी संवत् 1628 तद्नुसार 3 मार्च, 1572 को चित्तौड़ से 19 मील उत्तर पश्चिम में गोगुन्दा में प्रताप का राज्याभिषेक किया गया।

सिंहासन पर आसीन होते ही राणा प्रताप ने मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए यह दृढ संकल्प लेते हुए कहा था– "चित्तौड़ को स्वतंत्र करने तक मैं सोने–चांदी की थाली में भोजन नहीं करूँगा। मुलायम गद्दी पर नहीं सोऊंगा, राजप्रासाद में वास्तव्य नहीं करूंगा। इनके स्थान पर मैं पत्तल में भोजन करूँगा, जमीन पर सोऊंगा, झोपड़ी में वास करूंगा और चित्तौड़ को जब तक स्वाधीन नहीं करा लेता, तब तक दाढ़ी नहीं कटवाऊंगा।"

महाराणा का यह दृढ़ निश्चय देखकर अब्दुलरहीम खनखाना ने कहा था "धर्म रहसी, रहसीधरा खिसजासे खुरसाणा, अमर विसंभर ऊपर रखियो नहचो राणा" अर्थात् धर्म रहेगा, पृथ्वी भी रहेगी, पर मुगल साम्राज्य एक दिन नष्ट हो जाएगा हे राणा विशम्भर भगवान का भरोसा करके अपने निश्चय को अटल रखना।

उन्होंने जीवनभर इस प्रतिज्ञा का निर्वाह किया। उन्हें अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा पर वे कभी विचलित नहीं हुए। वे अपने सम्पूर्ण परिवार के साथ दर–दर जंगलों में भटकते रहे पर उन्होंने हार नहीं मानी।

अकबर को मेवाड़ की स्वाधीनता गले में कांटे की तरह खटकती थी। अतः उसने महाराणा प्रताप को उनकी अधीनता स्वीकार कराने के लिए तरह–तरह से अनेक प्रलोभन दिए। राजा मानसिंह को उन्हें मनाने भेजा पर महाराणा प्रताप अपने संकल्प पर अडिग रहे। अतः अकबर ने राजा मानसिंह और आसफ खां के नेतृत्व में 18 जून 1576 को मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया। हल्दी घाटी नामक स्थान पर श्रावण बदी 7 संवत् 1633 को भंयकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में अकबर की सेना में 80 हजार सैनिक थे जबकि महाराणा प्रताप के पास कुल 22 हजार योद्धा थे। जीतते–जीतते राणा प्रताप पराजित होने लगे तब वीर झाला सरदार ने, राणा का ध्वज मुकुट अपने सिर पर रखकर, स्वयं को राणा प्रताप घोषित कर युद्ध किया। राणा प्रताप चेतक नामक घोड़े पर सवार होकर रणक्षेत्र से बाहर आए किन्तु हल्दी घाटी से दो मील दूर बलिया नामक गाँव के पास एक घाटी को पार करते हुए चेतक ने भी वीरगति पाई।

इस भयंकर हार के बाद भी राणा प्रताप निराश नहीं हुए। भामाशाह की सहायता से उन्होंने पुनः सेना संगठित की। दानवीर भामाशाह ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति उन्हें दान में दे दी थी।

इस नवगठित सेना की सहायता से महाराणा प्रताप ने मुगलों के साथ फिर अनेक युद्ध किए और चित्तौड़, अजमेर और मांडलगढ़ को छोड़कर सारे मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।

विज्ञान और सनातन धर्म

एक माँ अपने पूजा–पाठ से फुर्सत पाकर अपने विदेश में रहने वाले बेटे से विडियो चैट करते वक्त पूछ बैठी

"बेटा! कुछ पूजा–पाठ भी करते हो या नहीं?"

बेटा बोला–

"माँ, मैं एक जीव वैज्ञानिक हूँ। मैं अमेरिका में मानव के विकास पर काम कर रहा हूँ। विकास का सिद्धांत, चार्ल्स डार्विन.. क्या आपने उसके बारे में सुना भी है?"

उसकी माँ मुस्कुरा कर बोली–

"मैं डार्विन के बारे में जानती है बेटा.. उसने जो भी खोज की, वह वास्तव में सनातन धर्म के लिए बहुत पुरानी खबर है।"

"हो सकता है माँ।" बेटे ने भी व्यंग्यपूर्वक कहा।

"यदि तुम कुछ होशियार हो, तो इसे सुनो." उसकी माँ ने प्रतिकार किया। "क्या तुमने दशावतार के बारे में सुना है? विष्णु के दस अवतार? "

बेटे ने सहमति में कहा–"हाँ! पर दशावतार का मेरी रिसर्च से क्या लेना–देना?"

माँ फिर बोली–

"लेना–देना है.. मैं तुम्हें बताती हूँ कि तुम और मि. डार्विन क्या नहीं जानते हैं?"

"पहला अवतार था 'मत्स्य, यानि मछली। ऐसा इसलिए कि जीवन पानी में आरम्भ हुआ। यह बात सही है या नहीं?"

बेटा अब ध्यानपूर्वक सुनने लगा..

"उसके बाद आया दूसरा अवतार 'कूर्म', अर्थात् कछुआ। क्योंकि जीवन पानी से जमीन की ओर चला गया... 'उभयचर (Amphibian)', तो कछुए ने समुद्र से जमीन की ओर के विकास को दर्शाया।"

"तीसरा था 'वराह अवतार, यानी सूअर जिसका मतलब वे जंगली जानवर, जिनमें अधिक बुद्धि नहीं होती है। तुम उन्हें डायनासोर कहते हो।"

बेटे ने आंखें फैलाते हुए सहमति जताई..

चौथा अवतार था 'नृसिंह', आधा मानव, आधा पशु जिसने दर्शाया जंगली जानवरों से बुद्धिमान जीवो का विकास।"

"पांचवें 'वामन हुए, बौना जो वास्तव में लंबा बढ़ सकता था। क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों है? क्योंकि मनुष्य दो प्रकार के होते थे होमो इरेक्टस (नरवानर) और होमो सेपिअंस (मानव), और होमो सेपिअंस ने विकास की लड़ाई जीत ली। "

बेटा दशावतार की प्रासंगिकता सुन के स्तब्ध रह गया..

माँ ने बोलना जारी रखा–

"छठा अवतार था 'परशुराम', जिनके पास शस्त्र (कल्हाडी) की ताकत थी। वे दर्शाते हैं उस मानव को, जो गुफा और वन में रहा.. गुस्सैल और असामाजिक।"

"सातवां अवतार थे 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, सोच युक्त प्रथम सामाजिक व्यक्ति। जिन्होंने समाज के नियम बनाए और समस्त रिश्तों का आधार।"

"आठवां अवतार थे 'भगवान श्री कृष्ण, राजनेता, राजनीतिज्ञ, प्रेमी जिन्होंने समाज के नियमों का आनन्द लेते हुए यह सिखाया कि सामाजिक ढांचे में रहकर कैसे फला–फूला जा सकता है।"

बेटा सुनता रहा, चकित और विस्मित...

माँ ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित रखी.

"नवां अवतार थे 'महात्मा बुद्ध, वे व्यक्ति जिन्होंने नृसिंह से उठे मानव के सही स्वभाव को खोजा। उन्होंने मानव द्वारा ज्ञान की अंतिम खोज की पहचान की। "

"और अंत में दसवां अवतार 'कल्कि' आएगा। वह मानव जिस पर तुम काम कर रहे हो.. वह मानव, जो आनुवंशिक रूप से श्रेष्ठतम होगा।"

बेटा अपनी माँ को अवाक् होकर देखता रह गया..

अंत में वह बोल पड़ा–

शेष भाग पेज 25 पर ......

युवा स्वतंत्रता सेनानी

देश इस 15 अगस्त को अपनी आजादी के 75 साल पूरे करेगा। ये आजादी का अमृत महोत्सव है। करीब 100 साल तक लड़ाई लड़ने के बाद 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के चंगुलसे देश आजाद हुआ था।

इस संग्राम में करोड़ों देशवासी अपनी आजादी के लिए लड़े। लाठियाँ खाईं। तकलीफें झेलीं, लेकिन देश को कभी झुकने नहीं दिया। जिस उम्र में लोग घर बसाने के सपने देखते हैं, उस उम्र में युवाओं ने सीने पर गोलियाँ खाई। कईयों ने खुशी–खुशी देश के नाम अपने पूरे जीवन को कुर्बान कर दिया। आज हम ऐसे ही पाँच युवा स्वतंत्रता सेनानियों की कहानी बताएंगे, जिन्होंने बहुत कम उम्र में देश के लिए अपनी जान कुर्बान की।

1. मंगल पांडे : उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा गाँव में जन्में मंगल पांडे स्वतंत्रता संग्राम के पहले हीरो हैं। मंगल पांडे के पिता का नाम दिवाकर पांडे और मां का नाम अभय रानी था। सन् 1849 की बात है। तब मंगल की उम्र महज 22 साल थी। उस वक्त वह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए थे। मंगल पश्चिम बंगाल के बैरकपुर की सैनिक छावनी में 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की पैदल सेना में एक सिपाही थे।

यहाँ गाय और सुअर की चर्बी वाली राइफल की नई कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ। इसके चलते हिंदू और मुस्लिम सैनिकों में आक्रोश बढ़ गया। नौ फरवरी 1857 को मंगल पांडे ने गाय और सुअर की चर्बी से बनने वाले नए कारतूस के इस्तेमाल से इनकार कर दिया। इसे अंग्रेजी हुकूमत ने अनुशासनहीनता माना । 29 मार्च सन 1857 को अंग्रेज अफसर मेजर हयूसन मंगल पांडेय से उनकी राइफल छीनने लगे। इस दौरान मंगल पांडे ने हयूसन को मार डाला। इसके अलावा अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेन्ट बॉब को भी मार डाला । इसी के साथ मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ एक जंग छेड़ दी। अंग्रेजों को मारने के चलते मंगल पांडे को आठ अप्रैल 1857 को महज 30 साल की उम्र में फांसी दे दी गई। मंगल पांडे की मौत के कुछ समय बाद प्रथम स्वतंत्रता संग्राम शुरू हो गया था जिसे 1857 का विद्रोह कहा जाता है।

2. भगत सिंह : 28 सितंबर 1907 की बात है। पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा में किशन सिंह और विद्यावती के बेटे ने जन्म लिया। दोनों ने बेटे का नाम भगत रखा। ये वही भगत सिंह हैं, जो महज 23 साल की उम्र में देश की आजादी के खातिर खुशी–खुशी फांसी पर चढ़ गए थे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की जिंदगी पर काफी असर डाला। इसके बाद उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर नौजवान भारत सभा की शुरुआत की और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। 1922 में चौरी चौरा कांड में जब महात्मा गांधी ने ग्रामीणों का साथ नहीं दिया तो भगत सिंह निराश हो गए। तब वह चंद्रशेखर आजाद के गदर दल में शामिल हो गए।

इसके बाद काकोरी कांड में राम प्रसाद बिस्मिल समेत चार क्रांतिकारियों को फांसी और 16 को आजीवन कारावास की सजा मिलने पर भगत सिंह भड़क गए। इसके बाद उन्होंने चंद्रशेखर आजाद की हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन को हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के रूप में बदला। इसका उद्देश्य आजादी के लिए नए युवाओं को तैयार करना था ।

भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स को मार डाला। इसके बाद भगत सिंह ने

क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल एसेंबली के सभागार में बम फेंकते हुए क्रांतिकारी नारे लगाए थे। इसके साथ आजादी के लिए पर्चे भी लहराए थे। इसे अंजाम देने के बाद भगत सिंह भागे नहीं, बल्कि उन्होंने गिरफ्तारी दी। उनपर लाहौर षड़यंत्र का मुकदमा चला और 23 मार्च, 1931 की रात उन्हें फांसी अंग्रेजी हुकूमत ने फांसी दे दी। उस वक्त उनकी उम्र केवल 23 साल थी।

3. चन्द्रशेखर आजाद : चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के अलीराजपुर स्थित भाबरा में हुआ था। इनका पूरा नाम चंद्रशेखर तिवारी था। लोग इन्हें आजाद कहकर भी बुलाते थे। पिता का नाम सीताराम तिवारी और मां का नाम जगरानी देवी था। 14 साल की उम्र में मध्य प्रदेश से आजाद बनारस आ गए। यहां एक संस्कृत पाठशाला में पढ़ाई की। यहाँ पर उन्होंने कानून भंग आंदोलन में योगदान भी दिया था।

1920–21 में आजाद गांधीजी के असहयोग आंदोलन से जुड़े। बाद में क्रांतिकारी फैसले खुद से लिए। 1926 में काकोरी ट्रेन कांड, फिर वाइसराय की ट्रेन को उड़ाने का प्रयास, 1928 में लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए सॉन्डर्स पर गोलीबारी की।

आजाद ने ही हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सभा का गठन भी किया था। जब वे जेल गए थे वहां पर उन्होंने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वतंत्रता' और 'जेल' को उनका निवास बताया था 27 फरवरी 1931 को वह प्रयागराज के अल्फ्रेड पार्क में अपने क्रांतिकारी साथी से बातें कर रहे थे इसी दौरान सीआईडी का एसएसपी नॉट बाबर जीप से आ पहुंचा। उसके साथ भारी संख्या में पुलिस फोर्स थी। किसी ने चंद्रशेखर आजाद की मुखबिरी कर दी थी।

चारों तरफ से आजाद को घेर लिया गया था। तब आजाद ने गोली चलाई। इसमें तीन पुलिसकर्मी मारे गए थे जब आजाद के पास सिर्फ एक गोली बच्ची तो उन्होंने अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद से मौत को गले लगाना ठीक समझा। आजाद ने खुद को गोली मार ली और शहीद हो गए। जब वह शहीद हुए तब उनकी उम्र 25 साल थी।

4. राजगुरु : हंसते–हंसते फांसी पर चढ़ने वाले युवा क्रांतिकारियों में एक नाम राजगुरु का भी है राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 में पुणे के खेड़ा गांव में हुआ था। इनका पूरा नाम शिवराम हरि राजगुरु था। जब राजगुरु छह साल के थे, तभी उनके पिता का निधन हो गया था। इसके बाद राजगुरु संस्कृत की पढ़ाई करने के लिए वाराणसी पहुंचे। यहां वह चंद्रशेखर आजाद के हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए। अंग्रेज अफसर सॉन्डर्स की हत्या में राजगुरु भी शामिल थे। एसेंबली में बम ब्लास्ट करने में भी राजगुरु ने हिस्सा लिया। 23 मार्च 1931 को 23 साल की उम्र में राजगुरु को भी भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी दे दी गई।

5. सुखदेव : पंजाब के लुधियाना शहर में सुखदेव थापर का जन्म 15 मई 1907 में हुआ था। सुखदेव के पिता रामलाल थापर और मां रल्ली देवी थीं। जन्म से तीन महीने पहले ही सुखदेव के पिता का निधन हो गया था। इसके बाद इनका पालन पोषण इनके ताऊ अचिन्तराम ने किया। सुखदेव लाला लाजपत राय से काफी प्रभावित थे। उन्हीं के जरिए ये चंद्रशेखर आजाद की टीम में शामिल हुए।

लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए जब चंद्रशेखर ने प्लान बनाया तो सुखदेव भी उसमें शामिल हुए। उन्होंने अंग्रेज अफसर सॉन्डर्स को मौत के घाट उतार दिया। जेल में रहते हुए भी सुखदेव ने राजनीतिक बंदियों के साथ किए जा रहे व्यवहार के खिलाफ आंदोलन चलाया था। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु के साथ सुखदेव को भी फांसी दी गई। फांसी के वक्त सुखदेव की उम्र भी महज 23 साल थी।

विज्ञान और सनातन का शेष भाग ....

"यह अद्‌भुत है माँ.. हिंदू दर्शन वास्तव में अर्थपूर्ण है!"

मित्रों ....

वेद, पुराण, ग्रंथ, उपनिषद, इत्यादि सब अर्थपूर्ण हैं। सिर्फ आपका देखने का नज़रिया होना चाहिए। फिर चाहे वह धार्मिक हो या वैज्ञानिक जय हिन्द।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (Ishwar Chandra Vidyasagar) बंगाल पुनर्जागरण के महत्त्वपूर्ण स्तंभों में से एक थे, जो 1800 के दशक के शुरुआती दिनों में राजा राममोहन राय द्वारा शुरू सामाजिक सुधार आंदोलन को जारी रखने में कामयाब रहे थे।

ईश्वरचन्द्र एक प्रसिद्ध लेखक, बुद्धिजीवी और मानवता के कट्टर समर्थक थे।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का असली नाम ईश्वरचन्द्र बंदोपाध्याय था। उस समय, महिलाओं का बाहर निकलना भी एक श्पापश माना जाता था। उस समय उन्होंने महिलाओं के लिए पढ़ाई लिखाई के लिए संघर्ष किया। उन्हें चार दीवारी से बाहर निकालने के लिए और उनके अधिकारों के लिए आंदोलन भी किया। विद्यासागर विधवा महिलाओं की दशा सुधारने के लिए संघर्षरत थे। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया और एक विधवा महिला से अपने बेटे की शादी भी की।

ईश्वरचन्द्रसंस्कृत के विद्वान थे। वे कलकत्ता के संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य थे। आइये देखते हैं उनके जीवन से 2 प्रेरक प्रसंग।

एक पैसा

एक बार सारे बंगाल में भयंकर सूखा पड़ा। भूख से व्याकुल लोग भोजन की तलाश में भागे फिर रहे थे। गांव के गांव खाली हो गये थे। उन्हीं दिनों ईश्वर चन्द्र विद्यासागर घूम रहे थे घूमते हुए उनके पास एक गरीब बालक आया और एक पैसा मांगने लगा।

ईश्वरचन्द्र ने देखा, बच्चे का मुंह सूखा हुआ है, मानो उसने कई दिनों से खाना ही नहीं खाया। ईश्वरचन्द्र को बच्चे पर दया आ गयी। उन्होंने बच्चे से पूछा–''अगर मैं तुम्हें एक पैसे के बदले दो पैसे दूं तो तुम क्या करोगे?''

बच्चे ने समझा वह हंसी कर रहे हैं–"महाशय मैं बड़ी परेशानी में हूँ, अगर आप मुझे चार पैसे दें, तो उनमें से दो पैसे की चीजें लूंगा और दो पैसे मां को दूंगा।''

ईश्वरचन्द्र ने पूछा, "अगर मैं तुम्हें चार पैसों की जगह चार आने दूँ तो?''

बच्चे ने जवाब दिया–''दो आने से खाने की चीजें खरीदूंगा, जिससे मेरा और मां का दो दिन का खाना आराम से चल जायेगा। बाकी दो आने से फल खरीदकर बेचूंगा और पैसे कमाएंगे।

ईश्वरचन्द्र बच्चे की बातों से बहुत खुश हुए और उन्होंने उसे एक रुपया दिया।

बच्चा रुपया लेकर चला गया। चार–पांच साल बाद ईश्वरचन्द्र फिर उसी जगह आये। एक दिन जब वह घूमने जा रहे थे, एक युवक उनके पास आया और प्रणाम करके बोला–"क्या आप थोड़ी देर के लिए मेरी दूकान पर चलेंगे?"

ईश्वरचन्द्र हैरान थे। उन्होंने उस युवक से कहा– "भाई, मैं तो तुम्हें नहीं जानता, तुम कौन हो?" उस युवक ने याद दिलाया कि चार–पाँच साल पहले उन्हीं के दिये हुए एक रुपये से उसने काम शुरू करके अब यह दुकान खोल ली है। वह लड़का चाहता तो विद्यासागर के पैसे से कई दिन आराम से रोटी खा सकता था, लेकिन उसने जीवन को आशावान बनाया और दूर का निर्णय लेकर अपना काम शुरू किया।

यही तो अंतर है सामान्य आदमियों में और कुछ अलग कर दिखाने वालों में। दो सीमाएं हैं, दो छोर हैं, जिनके बीच में काफी लम्बी दूरी है, एक भूतकाल और दूसरा भविष्य ।

अनेकता में एकता
हमारे देश की पहचान है
गर्व है हमें हमारी जन्मभूमि हिन्दुस्तान है

परामर्श कौशल प्रशिक्षण सम्पन्न

भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, सरस्वती कुंज निराला नगर लखनऊ के तत्वावधान में विद्या भारती पूर्वी क्षेत्र के शिशु मन्दिरों व विद्या मन्दिरों के आचायों के लिए परामर्श कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 जुलाई से 12 जुलाई 2023 तक आयोजित किया गया। दिनांक 10 जुलाई को कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो० अर्चना शुक्ला भूतपूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। प्रो० अर्चना शुक्ला ने अपने सम्बोधन में परामर्श कौशल के महत्व पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त मानसिक स्वास्थ्य–परिचय विषय पर प्रो० कृष्ण दत्त, अध्यक्ष काउन्सिलिंग विभाग इरा मेडिकल कालेज, लखनऊ ने व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में प्रो० रश्मि सोनी, जय नारायण पी० जी० कालेज, लखनऊ ने अध्यापक समस्याओं पर चर्चा की।

दूसरे दिन 11 जुलाई को प्रथम व द्वितीय सत्रों में प्रो० प्रदीप कुमार खत्री, पूर्व अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, नेशनल पी० जी० कालेज, लखनऊ ने परामर्श कौशल संकल्पना एवं व्यवहार विषय पर प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया। प्रो० खत्री ने बहुत विस्तार से परामर्श कौशल के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक विषय पर प्रकाश डाला।

तीसरे सत्र में प्रो0 सृष्टि श्रीवास्तव, भूतपर्व प्रधानाचार्या, नवयुग पी0जी0 कालेज, लखनऊ ने परामर्श में प्रयोग किए जाने वाले मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से प्रतिभागियों को विस्तार से बताया। इसी सत्र में सुश्री ज्योति सिंह ने पूर्व में किए गए शोध परिणामों को विस्तार से बताया ।

तीसरे दिन 12 जुलाई को प्रथम व द्वितीय सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा आवंटित विषयों पर विषयगत समस्याओं की चर्चा करते हुए समाधान हेतु सुझाव दिए गए। उनके प्रस्तुतीकरण, के सम्बन्ध में विशेषज्ञों क्रमशः प्रो० निशा मनी पाण्डेय, के० जी० एम० यू०, प्रो० तृप्ता त्रिवेदी, शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, प्रो० पी०सी० मिश्रा, भूतपूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ० प्रमिला तिवारी, महिला पी० जी० कालेज, लखनऊ ने टिप्पणी करते हुए प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया ।

समापन समारोह अपरान्ह 03 बजे आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो० जे०पी० सिंह, मंत्री, विद्या भारती पूर्वी उ0 प्र0 ने की और श्री दिनेश सिंह, प्रभारी, क्षेत्रिय प्रशिक्षण प्रमुख, श्री रामजी सिंह, प्रदेश निरीक्षक, विद्या भारती, प्रो० एस०के० द्विवेदी, उपाध्यक्ष, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, डॉ० सुबोध कुमार, शोध निदेशक, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, डॉ० शिव भूषण त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान व श्री विजय शर्मा, सहसचिव, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, डॉ० भानु प्रताप, सुश्री निधि सिंह एवं श्री तुषार कुमार उपस्थित रहे। इस सत्र में सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरण किए गए।

आवश्यक सूचना

संस्कृति बोध परियोजना की प्रगति कैसी है ? आपके पास अभियान हेतु बोध परियोजना के संकुल/जिला प्रमुख की सूची आ गई होगी, सूची समीक्षा वाट्स ऐप पर भेज दें जिससे अब तक कितने विद्यालयों की धनराशि कुरुक्षेत्र पहुंच गई, शेष की कब तक पहुँच जायेगी? विद्या भारती के सभी विद्यालयों को परीक्षा में भाग लेना अनिवार्य है अभियान हेतु विद्यालय में टोलियाँ बन गई हैं, एक दिन में कितने विद्यालयों से संपर्क करने की योजना है सम्पूर्ण नगर के प्रत्येक परिवार व विद्यालय तक पहुंचने की क्या योजना है? संस्कृति बोध अभियान के शुभारम्भ की योजनाक्या है?, संकुल जिला के संयोजकों के साथ प्रतिदिन समीक्षा करने वाली टोली बन चुकी है? अपनी प्रांतीय समिति के साथ योजना बनाये हमें भी सूचित करते रहें, ध्यान रहे अभियान का लक्ष्य बड़ा रख कर परिश्रम करना है।

बालकोना

बोतल के मुँह के नीचे से सिक्का हटाओ (भाग 'क')

(The Coin Under The Bottle (Part-I)

आवश्यक सामग्री – ढ़क्कन सहित एक लीटर की बोतल, पाँच रुपये का एक सिक्का, पतला स्टील का एक पैमाना (Ruler) तथा समतल टेबल का सतह।

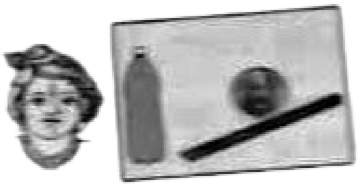

ऐसा करो –

1. बोतल में एक चौथाई पानी भरकर उसका ढक्कन बंद कर दो।
2. पाँच रुपये का सिक्का मेन के समतल सतह पर एक किनारे रखो।
3. सिक्के पर वोतत उलट कर रख दो।
4. अपने साथी को स्टील के पैमाने (Ruler) से बिना गिराये या लुड़काए बोतल के नीचे से पाँच रुपये का सिक्का निकालने को कहो।

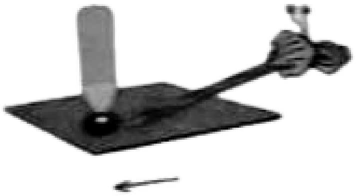

(1)

आप देखते हैं कि –

आप देखते हैं कि स्टील के पैमाने (Ruler) से सिक्के को इस प्रकार थकेला जाता है कि वह बिना बोतल को गिराए व लुड़काए गतिशील हो जाता है।

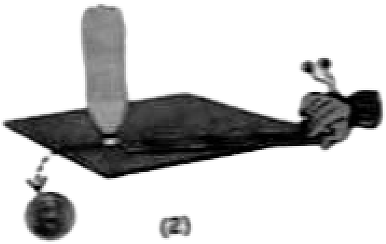

(2)

वैज्ञानिक कारण –

1. किसी वस्तु पर बल आरोपित करने से उसमें गति उत्पन्न होती है।
2. यहाँ बोतल और सिक्का टेबल के सतह पर विरामावस्था में हैं। सिक्के पर स्टील के पैमाने (Ruler) से बल लगाया जाता है तो वह गतिशील हो जाता है और बोतल स्थिर जड़त्व के कारण स्थिर अवस्था में ही रहती है।

सिद्धान्त–

यह प्रयोग न्यूटन के गति के प्रथम नियम पर आधारित है। इसमें पदार्थ के जड़त्व के सिद्धान्त का भी पालन होता है। पदार्थ का वह गुण जिसके कारण स्थिर वस्तु, स्थिर अवस्था में व गतिशील वस्तु गतिज अवस्था में ही रहती है या रहना चाहती है, जड़त्व कहलाती है। वस्तु की अवस्था में परिवर्तन बल लगाकर किया जा सकता है।

गतिविधियाँ

जनपद स्तरीय प्रधानाचार्य बैठक सम्पन्न

विद्या भारती से सम्बद्ध जन शिक्षा समिति अवध प्रान्त द्वारा संचालित जनपद हरदोई के समस्त विद्यालय के प्रधानाचार्य की बैठक दिनाँक 12 जुलाई 2023 को संगीता सरस्वती शिशु मन्दिर कछौना में सम्पन्न हुई।

बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में जन शिक्षा समिति अवध प्रान्त के प्रदेश निरीक्षक मिथिलेश अवस्थी व विशिष्ट अतिथि सम्भाग निरीक्षक श्याम मनोहर सिंह मौजूद रहे। बैठक के प्रथम सत्र वंदना के साथ प्रारम्भ हुई। उसके उपरांत जिला समिति गठित हुई। जिसमें शारीरिक प्रमुख विमलेश महरी, वैदिक गणित प्रमुख शिवम पाली, विज्ञान प्रमुख विनय तारगांव, संस्कृति बोध परियोजना विमल सांडी, संस्कार केंद्र प्रमुख ब्रजपाल करावा, योग शिक्षा प्रमुख अमन कोरिगवां, संगीत शिक्षा प्रमुख रामासरे कोथावा, संस्कृत शिक्षा प्रमुख राजेश्वर सैदपुर, नैतिक शिक्षा प्रमुख रामगोपाल परसोला, विद्वत परिषद अरुणेश पिहानी, क्रिया शोध परिषद श्रीनिवास नई ढिघियां, पूर्व छात्र परिषद विकास समसपुर, शिशु वाटिका प्रमुख रीतू संडीला, बालिका शिक्षा प्रमुख गीता पाली, प्रचार प्रमुख विशाल पाली, संपर्क प्रमुख ज्ञानेन्द्र गोपामऊ को जिम्मेदारी दी गयी। कार्य की दृष्टि से जनपद में जन शिक्षा समिति 5 संकुल केंद्र में विभाजित है जिनमे पाली, पिहानी, बिलग्राम, कछौना, संडीला हैं। बैठक के द्वितीय सत्र में आगामी कार्यक्रमों की योजना बनाई गई जिनमें शिशु वाटिका प्रशिक्षण 9, 10 सितंबर को पिहानी, TLM निर्माण कार्यशाला 23 अगस्त को सांडी, आचार्य विकास वर्ग 29, 30 जुलाई पाली, जनपदीय खेलकूद समारोह 4, 5 अक्टूबर गौसगंज, जनपदीय गणित, विज्ञान समारोह बिलग्राम, संस्कृति बोध परियोजना अभियान 20 जुलाई से 20 अगस्त तक अभियान चलेगा।

इस अवसर पर जनपद के 35 प्रधानाचार्य मौजूद रहे जिनमे शिवम तिवारी, रामशंकर शुक्ल, ज्योति, विमल, राजेश्वर, विनय बाजपेई, शैलेंद्र आदि लोग मौजूद रहे।

मेधावी छात्र-छात्राओं को समाजसेवी राम वीर प्रजापति ने किया सम्मानित

महराजगंज रायबरेली कस्बा स्थित स्वदेश सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज में सोमवार को सत्र 2022–23 के प्रथम तीन स्थान प्राप्त भैया बहनों को समाजसेवी राम वीर प्रजापति ने विद्यालय आकर सम्मानित किया। उन्होंने भैया बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज आप अपने कृतित्व एवं अपनी लगन के कारण सम्मानित हुए हैं इसी तरह दिन प्रतिदिन आगे बढ़ते रहो मेरी यही शुभेच्छा है। उन्होंने काव्य गायन से भी भैया बहनों को संस्कार एवं कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित किया। समिति के संरक्षक फत्ते सिंह ने अस्वस्थता के बावजूद भी भैया बहनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि कठिन परिश्रम करने वालों का पसीना समाज में नगीना बनकर चमकता है। आचार्य परिवार को बधाई देते हुए स्थान प्राप्त भैया बहनों को शुभाशीष दिया। सामाजिक कार्यकर्ता समिति सदस्य रमेश अवस्थी ने परिश्रम के प्रति साधना को एक रोचक कहानी के माध्यम से समझाया। कक्षा दशम में जिले की वरीयता सूची में स्थान प्राप्त भैया आरव द्विवेदी को विशेष पुरस्कार से विभूषित किया गया। कार्यक्रम का संचालन भैया अश्वनी ने किया एवं अतिथियों का परिचय विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कराया। समिति के उपाध्यक्ष श्री शोभनाथ जी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर आचार्य राकेश मिश्रा, कल्याण श्रीवास्तव, विचित्र अंबरीश, अमित सिंह, आदित्य मौर्य, राम आनन्द मौर्य

सरोज मौर्य, सीमा सहित समस्त आचार्य परिवार, व भैया बहन उपस्थित रहे।

मासिक बैठक का स्वरूप एवं क्रियान्वयन

सरस्वती शिशु मन्दिर लालपुर बाजार में सम्पन्न हुई जिला क्रियान्वयन बैठक' 09 जुलाई 2023 दिन रविवार को विद्या भारती (ग्रामीण) जिला सीतापुर के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के साथ जिला क्रियान्वयन बैठक का आयोजन सरस्वती शिशु मन्दिर लालपुर बाजार–सीतापुर में किया गया। बैठक की अध्यक्षता सीतापुर सम्भाग के सम्भाग निरीक्षक श्री रणवीर सिंह जी ने की।

माँ शारदे की वन्दना के पश्चात सम्भाग निरीक्षक जी ने वर्तमान सत्र में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों व गतिविधियों के क्रियान्वयन की मासिक योजना बनवाते हुए इन्हे पूर्ण करने की तिथि, समय व स्थान निर्धारित करते हुए सभी प्रधानाचार्यों से आग्रह किया कि हम अपने प्रभावी शिक्षण व शिक्षणेत्तर गतिविधियों के द्वारा अपने विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय का स्वरुप प्रदान करें जिससे हम अपनी कक्षाओं मे प्रवेश के संख्यात्मक मानक को पूर्ण करते हुए अपने विद्यालय में सुयोग्य छात्रो का चयन सम्भव कर सके।

वर्तमान विद्यालय के प्रबन्धक श्री माता प्रसाद वर्मा ने सम्भाग निरीक्षक श्री रणवीर सिंह जी, जिला प्रमुख श्री अरुणेश त्रिवेदी व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री हेमंत शुक्ला जी को अंग वस्त्र भेंटकर सम्मान प्रदान किया। बैठक में 3 संकुलों के 21 प्रधानाचार्य बन्धुओं की उपस्थिति रही। मंगल मंत्र के साथ बैठक का समापन किया गया।

गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम

03 जुलाई 2023 दिन सोमवार सरस्वती शिशु/विद्या मन्दिर निराला नगर, लखनऊ में ग्रीष्मावकाश के बाद शिक्षण कार्य का शुभारम्भ हवन पूजन व आरती के बाद शुरू किया गया। प्रातःकाल 08 बजे श्री देवेन्द्र तिवारी जी ने हवन पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। शिशु भारती, कन्या भारती, छात्र संसद के पदाधिकारियों ने व कक्षा प्रमुखों ने हवन किया। साथ में ही सभी आचार्य – आचार्यों व भैया बहिनों ने भी अपनी आहुतियाँ डाली । प्रधानाचार्य श्री रामतीर्थ वर्मा जी ने व्यास पूर्णिमा पर प्रकाश डालते हुये कहा कि प्राचीनकाल में व्यास पूर्णिमा से ही शिक्षा केंद्रो पर सत्र आरम्भ होता था। भगवान वेदव्यास आदिगुरु है, मानव जीवन के लिए आचार–विचार संस्कृति परम्परा, ज्ञान आदि के लिए उन्होने मानव जाति को निर्देशित किया है, मानवता का संदेश दिया है।

आज का दिन विद्यालय प्रारम्भ करने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, उन्होने भैया–बहिनों को शुभकामना दिया एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह

सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर साहूकारा पीलीभीत में शिशुभारती बाल भारती एवं कन्या भारती के पदाधिकारी भैया–बहिनों का शपथ ग्रहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की वन्दना से हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि शिशु शिक्षा समिति ब्रज प्रदेश के प्रदेश निरीक्षक मा0 रामकिशोर श्रीवासतव एवं मुख्य अतिथि श्री वतन दीप मिश्रा सभासद वार्ड नं. 15 पीलीभीत व मोहनस्वरूप मौर्य सभासद वार्ड नं. 13 उपस्थित रहे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सन्तोष कुमार तिवारी ने अतिथि परिचय कराया और शिशु/बाल कन्या भारती के गठन का महत्व बताया। श्री वतन दीप मिश्रा व श्री मोहन स्वरूप मौर्य ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्रदेश निरीक्षक रामकिशोर श्रीवासतव ने पदाधिकारियों को दायित्व बोध का परिचय कराया और इसका निर्वहन करते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर होने का आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के संयोजक श्री अशोक कुमार जी रहे।

हमारे विभिन्न कार्यक्रम

भारतीय शिक्षा समिति अवध के विषय प्रमुखों की बैठक

वन्दना सभा में वन्दना करते हुए भैया-बहिन

विद्या भारती पूर्वी उ.प्र. क्षेत्र की प्रश्न-पत्र निर्माण कार्यशाला (प्राथमिक)

विद्यालय में गतिविधि करते भैया-बहिन

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

हमारे विभिन्न कार्यक्रम

खेल कूद विभाग की वार्षिक कार्ययोजना बैठक

संस्कृति बोध परियोजना का प्रचार करती टोली

प्रथम दिन आने पर भैया-बहिनों का स्वागत करती आचार्या दीदी

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : **01.07.2023**